श्रीः ।

पार्वणश्राद्धपद्धतिः ।

भाषाटीकासहिता ।

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस-बंबई.

॥ श्रीः ॥

श्रीशुक्लयजुर्वेदीयमाध्यंदिनवाजसनेयिगौडानामनुकल्पोक्ता—

पार्वणश्राद्धपद्धतिः।

श्रीरत्नगढनगरनिवासि-पण्डितश्रीकस्तूरीचन्द्रात्मज-गौडश्री
चतुर्थीलालशर्मविरचितश्राद्धप्रकाशपद्धतिखण्डान्तर्गता।
पुनस्तेनैव विदुषा विरचितया.

भाषाटीकया सहिता।

क्षेमराज श्रीकृष्णदासश्रेष्ठिना

मुम्बय्यां

(खेतवाडी. ७ वीं गली खम्बाटा लैन)

स्वकीये "**श्रीवेंकटेश्वर**" स्टीम् मुद्रणयन्त्रालये
मुद्रयित्वा प्रकाशिता।

संवत् १९७३, शके १८३८.

यह पुस्तक खेमराज श्रीकृष्णदासने बम्बई खेतवाडी ७ वी गली खम्बाटा लैन, निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेसमें अपने लिये छापकर यहीं प्रकाशित किया.

सूचना.

सकल सज्जन महाशयोंसे प्रार्थना है कि, जबसे मैथिल रुद्रधरकृत (श्राद्धविवेक) का प्रचार हुवाहै तबसे हमारे गौड सांप्रदायके ग्रंथ और प्राचीन दाल्भ्यकृत पद्धति आदि नष्ट होरही हैं। कारण लिखने पढ़नेके आलस्यसे तथा काशी आदि नगरोंकी पाठशालाओंमें मैथिलोंके संसर्ग होनेसे श्राद्धविवेककी पद्धतियां चालू हो. गईं, परंतु यह ग्रंथ हमारा नहीं किंतु मैथिलोंकाहै जिसमें हम श्राद्धविवेककी व्यवस्थाको हमारी सांप्रदायसे भिन्न दिखाते हैं. प्रथम तो १ मुर्देका नीचेको मुख करके जलाना ॥ २ मरणसमयमें मृतिस्थान आदिका पंचपिंड नहीं देना॥३दाह-के अनंतर अञ्जलिदान (द्विगुणभुग्न) मोटक रूप कुशासे देना (हेमाद्रिकारिका गारुडेषु) सपिंडी-करणं यावदृजुदर्भैः पितृक्रिया।सपिंडीकरणादूर्ध्वं

द्विगुणैर्विधिवद्भवेत् ॥ ४ अस्थिसंचयनिमित्तक एकोद्दिष्ट श्राद्ध समंत्रक लिखना (तदुक्तंहेमाद्रौ) तिलमिश्रेषु दर्भेषु कर्ता वै दक्षिणामुखः । नाम-गोत्रप्रमाणेन दद्यात्पिंडं त्वमंत्रकम् । तूष्णीं धूपं प्रसेकं च दीपं पुष्पं तथैव च ॥ अशुद्धस्त्रिषु वर्णेषु इदं दद्यान्न संशयः ॥ ५ प्रेतश्राद्धोंमें मह-र्षियोंसेत्यागा हुआ अष्टादश पदार्थोंका ग्रहण क-रना(तदुक्तं हेमाद्रिविष्णुपुराणगारुडेषु) आशिषो द्विगुणा दर्भा जपाशीःस्वस्तिवाचनम्। पितृशब्दः स्वसंबंधःशर्मशब्दस्तथैवच। आवाहःपात्रालंभश्च उल्मुकोल्लेखनादिकम्॥तृप्तिप्रश्नश्च विकिरः शेषः प्रश्नस्तथैवच ॥ प्रदक्षिणाविसर्गश्च सीमांतं गमनं तथा ॥ अष्टादश पदार्थास्तु प्रेतश्राद्धेषु वर्जयेत्॥ इत्यादि बहुतसी बातें महानिबंध और निज सां-प्रदायसे विरुद्धहैं अतएव हमने निज सांप्रदायके उद्धारके अर्थ,हेमाद्रि,पराशर,माधव, पारिजात

अष्टाविंशतितत्त्व, कर्कभाष्य, श्राद्धकाशिका, निर्णयामृत आदि महानिबंधोंसे निज सांप्रदायके अनुसार अनेक पद्धति और प्रमाण युक्त(श्राद्ध प्रकाश नाम) ग्रंथ बनाके मुंबई निवासी प्रियवर वैश्य श्रीकृष्णदासात्मज श्रेष्ठि खेमराज "श्रीवेङ्कटेश्वर" प्रेस अधिपतिको दिया और उन्होंने छापके प्रकाशित किया है, वह आप लोगोंका मनोरथ पूर्ण करेगा ॥ ॥ अलम् ॥

आपका कृपाभिलाषी,
पण्डित श्रीकस्तूरीचंद्रात्मज श्रीचतुर्थीलाल गौड,
रतनगढनिवासी.

श्रीवेदमात्रे नमः ।

अथ पार्वणश्राद्धपद्धतिः ।

भाषाटीकासहिता ।
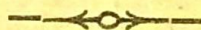
तत्रतावत्पूर्वदिनकृत्यम् । कर्तापूर्वेद्युर्निरामिषमेकवारंभुक्त्वा तद्दिनेरात्रौप्रदोषान्ते असंभवे प्रातर्वा श्राद्धारंभसमये वा यथावकाशं विप्रगृहं गत्वा ब्राह्मणनिमंत्रणं कुर्यात् । ततो निमंत्रितो विप्रः श्राद्धकर्त्ता च द्विर्भोजनं वेदाध्ययनं दूरगमनं मैथुनं भारोद्वहनं श्रमं हिंसां क्रोधं त्वरां प्रमादं कलहं क्षौरं च वर्जयेत् । शुचिः सत्यवादी क्षमी ब्रह्मचारी च स्यात् । पूर्वमङ्गीकृतनिमंत्रणोनान्यन्निमंत्रणमिच्छेत् ॥ नान्यदन्नं प्रतिगृह्णीयात्नान्यत्रगमनादिनाकृतपादिश्राद्धकालातिक्रमंकुर्यात् नचाऽस्नातः श्राद्धेभुञ्जीत ॥

अथ भाषाभावार्थः—लिख्यते । प्रथम श्राद्धके पूर्व दिनका कर्म लिखते हैं-श्राद्ध करनेवाला पहलेदिन (निरामिष) अर्थात् मांस आदि निषिद्ध वस्तु त्याग-के उत्तम चावल आदि पदार्थ एक वक्त भोजन करै । फिर उसी दिन सायंकाल अथवा श्राद्धके दिन प्रातः-काल या श्राद्धके वक्त जब फुरसत होवे तबही ब्राह्मणके घरमें जाके (निमंत्रण) न्योता देवै परन्तु द्विजातिहोके शूद्रद्वारा न्योता नहीं दिवावैं । पश्चात् न्योता दियाहुवा ब्राह्मण और यजमान दोनोंही दोबेर भोजन । वेदका पठन । दूसरे ग्राम आदिको जाना । स्त्रीसंग । भार उठाना । परिश्रम करना । जीवहिंसा । क्रोध । शीघ्रता अर्थात् जल्दी । प्रमाद । कलह । क्षौर (हजामत) इत्यादि कर्म नहीं करै । और पवित्र रहना, सत्यबोलना, क्षमारखना, ब्रह्मचर्य अर्थात् स्त्री-संगका त्याग इत्यादि नियमोंको धारण करै । पहले(नि-मंत्रण)न्योता मानके दूसरेके न्योतेकी इच्छा नहींकरै ।

दूसरेका प्रतिग्रह अन्नभी नहीं लेवै और किसी दूसरे काममें लगके कुतपादि श्राद्धका काल नहीं गमावै (कुतपकालकालक्षणं पराशरस्मृतौ । अह्नो मुहूर्ता विख्याता दशपंच च सर्वदा ॥ तत्राष्टमो मुहूर्तो यः स कालः कुतपः स्मृतः) इति । अर्थात् बारह बजेके बाद (कुतप) श्राद्धका काल आताहै । स्नानकरे बिगर श्राद्धका भोजन नहीं करे ॥ इति पूर्वदिनकर्म॥

अथ श्राद्धदिनपूर्वाह्णकृत्यम् ।

कर्ताब्राह्मेमुहूर्त्तेउत्थाययथोपदेशं शौचविधिं कृत्वाऽऽचम्यदंतधावनंनतुकुर्यात् । ततोनद्यादौस्नात्वाप्रक्षालिततनुःश्वेतवाससीपरिधाय संध्यादिनित्यावश्यकं समाप्य पाकभूमिं गोमयादिनासंस्कुर्यात् । तत्र नूतनताम्रादिपात्रेषु यथाशक्त्युत्कृष्टमन्नं भक्ष्यभोज्यादिनानाप्रकारमनेकव्यंजनयुतं स्वयं यजमानः पक्तुमारभेत ॥ अशक्तश्चेद्बांधवैः स्त्रिया

वा पाचयेत् । अमातृपितृवंशजां पाखण्डां पुंश्चलीं पतितां वंध्यामन्यगोत्रजां व्यंग-कर्णीं चतुर्थदिने स्नातामपि गर्भिणीं च पाकार्थं वर्जयेत् । एवंसमाप्तेचपाके श्राद्धभूमिं गोमयोदकेनोपलिप्यज्वलदंगारैःसंशोध्यगौरमृत्तिकयाऽऽच्छाद्यतिलैर्गौरसर्षपैश्चविकिरेत् ।

भाषाभावार्थ—श्राद्धके दिनके प्रातःकालका कर्म लिखतेहैं—श्राद्ध करनेवाला (ब्राह्म मुहूर्त) अर्थात् रातके चार बजे उठके जैसा अपनेको उपदेश दिया हुवा होवै तैसेही । (शौचविधि) अर्थात् दस्त पेशाब आदिसे निबटके शुद्ध होवै और आचमन करै परन्तु (दंतधावन) दँतौन नहीं करै दँतौनके बदले बारह १२ जलके कुल्ले करै । फिर नदी तालाब आदिमें स्नान करके धोया हुवा नवीन सुपेद वस्त्र (धोती, साफा) धारै और संध्या, जप, ब्रह्मयज्ञ, तर्पण, देवपूजनआदि नित्यकर्म समाप्त करके पाकभूमिकी गोमय मिट्टी,

जल आदिद्वारा शुद्धि करै । फिर उसी जगह नवीन शुद्ध(साफ)तांबे पीतल मिट्टी आदिके पात्रोंमें शक्त्यनुसार भक्ष्य भोज्य अर्थात् लड्डू खीर पुये आदि अनेक पदार्थ (.व्यंजन) शाक, बडे, पकोडी, रायता, दही आदि सहित करै । परन्तु पाक करनेमें खुद यजमानका अधिकार है अथवा बांधव या अपनी स्त्री या ब्राह्मण द्वारा करावे परन्तु जो माता या पिताके वंशसे रहित हो, पाखंडमतकी अर्थात् नास्तिकमतकी हो, बदचलन हो, पापिनी हो, बांझनी हो टूटे कानवाली हो, रजस्वला हो,गार्भिणी हो इत्यादिके द्वारा नहीं बनवावे । इसतरह पाक तैयार होनेके अनंतर श्राद्ध करने योग्य मकानके गोमय मिट्टी जल आदिका लेप करावे और अग्निसे जलता हुवा तृण फेरके साफ शुद्धमिट्टी (रेत)बिछावे और तिल पीलीसरसोंका विकिरण करै ॥

तत्रश्राद्धसामग्रींसंपाद्याऽपराह्णेस्नात्वाशुक्लवाससीद्वेपरिधायब्राह्मणैः सहश्राद्धभूमिमागत्य

अन्नाभिप्रायेण सिद्धमित्युक्त्वा आसनानि उपस्पृश्य अत्राध्वमितिदेवब्राह्मणान्प्राङ्मुखान् पितृब्राह्मणानुदङ्मुखानुपवेशयेत् ॥ (तदभावेकुशमयद्विजान्वा स्थापयेत्) ततस्तेषांपादयोरधस्ताद्दक्षिणाग्रंकुशत्रयंप्रत्येकंदत्त्वाप्रत्यासनसमीपेतिलतैलेनश्राद्धापवर्गस्थायिनोदीपान्दद्यात्तेषांरक्षाद्विजैरेवकार्या। काककुक्कुटादीन्श्राद्धापहर्तृनपसारयेत्। श्राद्धदेशावरणंचकुर्यात्॥ततः कर्तास्वासनेप्राङ्मुखउपविश्य सव्येनाचम्य ॐ अपवित्रःपवित्रोवा सर्वावस्थांगतोपिवा।यःस्मरेत्पुंडरीकाक्षं सबाह्याभ्यंतरःशुचिः।ॐपुंडरीकाक्षःपुनात्वितिपठित्वाकुशत्रयानीतजलेन श्राद्धदेयद्रव्याणिस्वात्मानंचसिंचेत् ॥

भाषाभावार्थ—पश्चात् अपराह्न कालमें अर्थात् एकबजे शुद्धजलसे स्नान करै और सुफेद वस्त्र धोती

अँगोछा धारण करके ब्राह्मणोंके साथ श्राद्ध करनेके स्थानमें पधारे फिर पाक तैयारहै ? ऐसा कहके आसन बिछावै और उन आसनोंपर ब्राह्मणोंको बैठावै अर्थात् विश्वेदेवोंके दो २ ब्राह्मणोंको पूर्वको मुख करके और पितृब्राह्मण ६ को उत्तरको मुख करके बैठावै यदि ब्राह्मण नहीं मिलें तो दर्भोंके बनाके स्थापन करै फिर उन ब्राह्मणोंके पावोंके तले दक्षिणको आगेका भाग करके तीन २ कुशाके पत्तोंको धरै और एक एकके पास तिलोंके तेलसे भराहुवा दीपक जलाके स्थापन करे दीपकोंकी रक्षा ब्राह्मणोंको करनी चाहिये और कव्वा, मुरगा, कुत्ता, चील, शूर, मार्जार आदि निषिद्ध जानवरोंको पास नहीं आनेदेवै इनको दूर हटादेवै और मकानको वस्त्रसे अर्थात् परदे पाल आदि लगा-के बन्द करदेवै, पश्चात् श्राद्ध करनेवाला आसनपर पूर्वको मुख करके बैठे, सव्य होके तीनबेर आचमन करै फिर (अपवित्रः) इस श्लोकको पढ़े और

(पुंडरीकाक्षः पुनातु) इस मंत्रसे दर्भा करके जल-द्वारा संपूर्ण सामग्रीको तथा अपने शरीरको पवित्र करै ॥

ततःॐवैष्णव्यैनमः ॐकाश्यप्यैनमः। ॐअ-क्षय्यायैनमः। ॐभूम्यैनमः। इतिनत्वा । श्रा-द्धदेशंगयात्मकत्वेन तदेकदेशस्थंगदाधरंच ध्यात्वातयोःॐभगवत्यैगयायैनमः।ॐभगव-तेगदाधरायनमःइतिमनोवाक्कायैर्नमस्कारंकु-र्यात, ततःकुशत्रययवजलान्यादाय देशका-लौ संकीर्त्य ॐअद्याऽमुकगोत्राणामस्मत्पितृ-पितामहप्रपितामहानाममुकामुकशर्मणांसप-त्नीकानांवसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां तथाऽस्मन्मा-तामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानाममुकामुक-शर्मणांसपत्नीकानांवसुरुद्रादित्यस्वरूपाणांस-दैवं पार्वणश्रद्धंपितृतृप्तिकामोऽहंकरिष्ये।इति-संकल्प्य गायत्रींत्रिर्जपित्वा ॐदेवताभ्यःपितृ-

भ्यश्चमहायोगिभ्यएवच।नमःस्वाहायैस्वधायै नित्यमेवनमोनमः। इतित्रिर्जपेत्।ततोयवान् तिलगौरसर्षपांश्चगृहीत्वा।ॐनमोनमस्तेगोविन्द पुराणपुरुषोत्तम।इदंश्राद्धंहृषीकेशरक्षतांसर्वतो दिशः॥ इतिपठित्वा। ॐतिलारक्षन्त्वसुराद् दर्भारक्षंतुराक्षसात्॥वह्निर्वैश्रोत्रियंरक्षेदतिथिः सर्वरक्षकइतिमंत्रेणतिलकुशान्द्वारदेशेक्षिप्त्वा॥

भाषाभावार्थ–प्रोक्षण करनेके अनन्तर (वैष्णव्यै०काश्यप्यै०अक्षय्यायै०भूम्यै०)इनमन्त्रोंसे पृथ्वीको नमस्कार करै। फिर श्राद्धस्थानको गयासदृश समझके और तहां स्थित गदाधर भगवान्का ध्यान करके (भगवत्यै गयायै० भगवते गदाधराय नमः) इन मन्त्रोंसे मन, वाणी, काय द्वारा नमस्कार करै पश्चात्–त्रिकुश, तिल, जल,यव आदि तांबेके पात्रमें लेके दक्षिण हाथसे संकल्प करै अर्थात् संवत्, ऋतु, मास, पक्ष, तिथि, वार आदिका उच्चारण करके अपने

गोत्रका उच्चारण करै और अमुक गोत्र, नामवाले हमारे पिता पितामह (दादा) प्रपितामह (परदादा) और अमुकगोत्र नामवाले हमारे मातामह (नाना) प्रमा-तामह (परनाना) वृद्धप्रमातामह (बूढानाना) हैं उनकी तृप्तिके अर्थ हम पार्वणश्राद्ध करतेहैं ।ऐसे कहके पात्रका जल तिल आदि पृथिवीपै छोडदेवै । फिर ब्रह्मगायत्रीका तीनबार जप करके (देवताभ्यः) इस मन्त्रको तीनबार पढै । पश्चात् यव, तिल, पीली सरसों, कुशा वाम हाथमें धारणकरके (नमो नमस्ते गोविंद) इत्यादि मन्त्रोंको पढके दक्षिणहाथसे पूर्व आदि दशदिशाओंमें सर्वत्र विकिरण करै अर्थात् छिडक देवै ॥

ॐअग्निष्वात्ताःपितृगणाःप्राचींरक्षन्तुमे दिशम् । इतिमंत्रेणप्राच्याम्॥ ॐतथाबर्हिषदःपान्तुयाम्यां येपितरः स्थिताः। इतिमंत्रेणयाम्याम्॥ॐप्रतीची माज्यपास्तद्वत्।इत्यनेनप्रतीच्याम् । ॐ उदी-

चीमपिसोमापाः।इत्यनेनोदीच्याम् । ॐअधो-
र्ध्वमपिकोणेषु हविष्मन्तश्च सर्वतः।इति०।ॐ
रक्षोभूतपिशाचेभ्यस्तथैवासुरदोषतः।सर्वतश्चा-
धिपस्तेषां यमोरक्षांकरोतुवै॥वायुभूतपितॄणां
चतृप्तिर्भवतुशाश्वती । इत्यनेनअधस्तादूर्ध्व-
कोणेषुच सर्वत्र तिलान् गौरसर्षपांश्चविकीर्य्य
अपसव्येन वामे दक्षिणकटिभागे वा यथाचारं
नीवीबंधो विधेयः।ततःसव्येन कस्मिंश्चित्पात्रे
जलंगृहीत्वा दर्भैरालोड्य ॐ येदेवादेवहेडनं
देवासश्चकृमावयम् ॥ अग्निर्म्मातस्मादेनसो
विश्वान्मुञ्चत्वꣳहसः॥१॥यदिदिवायदिनक्त-
मेनांसिचकृमावयम्॥वायुर्म्मातस्मादेनसोवि-
श्वान् मुञ्चत्वꣳहसः॥२॥यदिजाग्रद्यदि स्वप्न-
एनाꣳसिचकृमावयम्॥ सूर्य्योमातस्मादेनसो
विश्वान्मुञ्चत्वꣳहसः॥३॥इतिकूष्मांडसूक्तेना-
भिमंत्र्य। ॐउदक्यादिदृष्टिपातात् शूद्रादिसं-

पर्कदोषाच्चपाकादीनांपवित्रताऽस्तु इतिपा-
कादीन्संप्रोक्ष्य हरये निवेदयेत् ॥

भाषाभावार्थ-(तिलारक्षंतु इत्यादिमन्त्रोंका अर्थ) कृष्णतिलहैं सो(असुर) दैत्योंसे रक्षा करैं (दर्भा)राक्ष-सोंसे रक्षा करैं । (वह्निः) अग्निदेवता वेदपढनेवाले की रक्षा करैं । (अतिथि) अभ्यागत सर्व तरहसे रक्षा करो (अग्निष्वात्ता) नामवाले पितर पूर्वकी तरफ रक्षा करो । (बर्हिषद) नामके पितृगण दक्षिणको । (आज्यपा) नामवाले पश्चिमको और (सोमपाः) इस नामवाले पितृगण उत्तरको रक्षा करो (हविष्मंतः) इसनामके पितृगण (अधः) नीचेको (ऊर्ध्वं) ऊपरको (कोणेषु) अग्निनिर्ऋति आदिकोणोंकी तरफ रक्षाकरो और राक्षस भूत पिशाच असुर आदि संपू-र्णके विघ्नोंसे यमराज रक्षा करो। और वायुभूत अर्थात् पवन मात्र पितृगणहैं सो (तृप्ति) अक्षय्य तृप्तिको प्राप्त होवो इत्यादि मन्त्रोंको पढके पूर्व, दक्षिण,

पश्चिम, उत्तर, नीचे, ऊपर, कोण ४ सर्व जगह तिल, सरसोंका विकिरण करे और वामे या दक्षिण कटिवस्त्रके बाहर तिल कुशाका स्थापन करे इसको नीवीबन्धन कहते हैं नीवीबन्धन अपसव्यसे करना चाहिये कारण अगाड़ी अपसव्यहीसे निकाली जावेगी। फिर सव्यहोके (यद्देवा) इनमंत्रोंसे मंत्रितकिये जल करके दर्भासे अन्न आदिका प्रोक्षण करै और विष्णुको निवेदन करै ॥

अथ आसनादिदानम्। तत्रतावत् उदङ्मुखः सजघनंदक्षिणंजान्वाच्य यज्ञोपवीत्यन्तर्जानुकरोजलयवसमन्वितं कुशत्रयमृज्वेवादाय। ॐअद्याऽस्मत्पित्रादित्रयश्राद्धसंबंधिनःपुरूरवार्द्रवसंज्ञका विश्वेदेवाइदमासनं वोनमः। इत्युच्चार्य देवतीर्थेन पूर्वाग्रं कुशत्रयमुत्सृजेत् एवंमातामहादिदेवेभ्योऽपिदद्यात्। ततोदक्षिणमुखःप्राचीनावीतीःपातितवामजानुः द्विगु-

णमुग्रकुशत्रयतिलजलान्यादाय ॐअद्यामुक गोत्रअस्मत्पितरमुकशर्मन् सपत्नीक वसुरूप इदमासनंतुभ्यंस्वधा इत्युच्चार्य पितृतीर्थेन (मोटकं) दक्षिणाग्रमुत्सृजेत् । एवमेव पितामहादिपञ्चभ्योपिदर्भासनानि दद्यात् । ततः सव्यादिनासयवकरः ॐपुरूरवार्द्रवसंज्ञकान् विश्वान्देवानहमावाहयिष्ये इत्युच्चार्य ॐ विश्वेदेवासऽआगतशृणुतामऽइमर्ठंहवम्॥एदं बर्हिर्निषीदत॥इत्यनेनावाह्ययवोसियवयास्मद्द्वेषोयवयारातीः । इत्यनेन यवान् विकीर्य ।

भाषाभावार्थ—आसनादिक देनेकी विधि लिखते हैं—प्रथम उत्तरकी तरफ मुख करै और जांघ सहित दाहिने (जानु) गोडाको नीचेको रक्खै फिरसव्य होके गोडोंके अन्तर हाथ रखके दक्षिणहाथमें जल यव (ऋजु) सरल कुशत्रय आदि लेके अपने गोत्रका उच्चारण करे और कहे कि, हमारे (पित्रादित्रय)

अर्थात् पिता, दादा, परदादाके श्राद्धके (संबंधि) रिस्तेदार (पुरूरवार्द्रवौ) नामवाले विश्वेदेवता यह दर्भाके आसन (वो) आपके अर्थहैं सो ग्रहण करो ऐसे उच्चारण करके (पूर्वाग्र) अर्थात् पूर्वको आगेका हिस्सा करके कुशाका मिलाहुवा तीन पत्ता वेदीपै छोडदेवे । इसीतरह दूसरी उत्तर वेदीपै मातामह आदिके संबधि विश्वेदेवोंके अर्थ आसन देवै, पश्चात् दक्षिणको मुख करके अपसव्य होवे और बावां गोडा नीचेको रखके (द्विगुणभुग्न) अर्थात् बीचसे दुगुणी करके बंटदेवे इसको मोटक कहतेहैं सो ऐसी तीन पत्तेवाली दर्भा लेवे और अपने पिताका गोत्र, नाम, उच्चारण करके कहे कि, हे पितः! स्त्रीसहित आपके अर्थ यह दर्भाका आसन देताहूं ऐसे कहके दक्षिणको आगेका तथा पीछेका दीनों भाग करके तिलजलसहित पितृतीर्थ अर्थात् अँगूठे और अगली उँगुलीके बीचसे देदेवे इसीतरह दादा, परदादा, नाना, परनाना, बूढा-

नाना इन पांचोंके अर्थ मोटक आसन देना चाहिये । फिर सव्य होके यव हाथमें लेके विश्वेदेवोंका आवाहन करे अर्थात् कहै कि, पुरूरवार्द्रव नामवाले विश्वेदेवताओंको हम बुलातेहैं ऐसे कहके (विश्वेदेवासः) इस मन्त्रसे विश्वेदेवोंका आवाहन और स्थापन करै । (विश्वेदेवासः) इस मंत्रका अर्थ । हे विश्वेदेवादेवता! (यूयम्) आपहो सो (आगत) हमारे प्रति आवो और आकरके (इदम्) इस (मे) मेरे (हवम्) आवाहनको (शृणुत) श्रवण करो और सुननेके अनंतर (एदम) इस हमारे (बर्हिः) दर्भारूप आसनमें (निषीदत) स्थित होवो । इत्यर्थः ॥

ॐविश्वेदेवाःशृणुतेमꣳ हवम्मेयेऽअन्तरिक्षेयऽ उपद्यविष्ठ॥येऽअग्निजिह्वाऽउतवायजत्राऽआस द्यास्मिन्बर्हिषिमादयध्वम् । इतिजपेत्(विश्वेदेवोत्पत्तिनाम्नोरज्ञाने)ॐआगच्छन्तुमहाभागा विश्वेदेवामहाबलाः।येयत्रयोजिताः श्राद्धे

सावधानाभवन्तुते। इतिश्लोकोऽप्युच्चारणीयः। ततोऽपसव्यादिनासतिलहस्तः। ॐ पितॄनह-मावाहयिष्ये। इत्युच्चार्य्य ॐउशन्तस्त्वानि-धीमह्युशन्तःसमिधीमहि॥ उशन्नुशतऽआवह पितॄन्हविषेऽअत्तवे॥ इत्यावाह्य ॐ अपहताऽ असुरारक्षा ꣳसिवेदिषदः। इतितिलान् श्राद्धदे-शेविकीर्य्य।ॐआयन्तुनः पितरः सोम्यासोऽ ग्निष्वात्ताःपथिभिर्देवयानैः।अस्मिन्यज्ञेस्वध-यामदन्तोधिब्रुवन्तुतेऽवन्त्वस्मान्॥इतिजपेत्।

भाषाभावार्थ—विश्वेदेवोंके आवाहन करनेके अन-न्तर (यवोसियवया) इस मंत्र करके विश्वेदेवोंके स्थान में यव विकिरण करै (यवोसि इसमंत्रका अर्थ) हे यव धान्य ! तुम (यवोसि) संपूर्ण धान्योंमें पृथक् हो अर्थात् श्रेष्ठतामें सर्वसे निरालेहो इसवास्ते (अस्म-द्वेषः) हमारे उपचारसे होनेवाले शत्रुवोंको और (अरातीः) सहज शत्रुओंको (यवय) पृथक् २ जुदा

जुदा करो अर्थात् हमको शत्रुरहित करो इत्यर्थः। यव गेरणेके बाद (विश्वेदेवाःशृणु) इस मंत्रको पढे (विश्वेदेवाःशृणु) इसका भावार्थ,हे विश्वेदेवादेवता! (यूयं) आप (मे) मेरे (इदंहवं) इस आवाहनको (शृणुत) श्रवणकरो । कैसे आपहो ? (अन्तरिक्षे) आकाशमें स्थित होनेवाले हो और (उप) समीप पृथ्वीके विषे (द्यवि) स्वर्गमें रहनेवाले हो और आप (अग्निजिह्वा) अग्निदेवके द्वारा हवि भोगनेवाले और (यजत्रा) यजन करनेवाले यजमानकी रक्षा करनेवाले हो (पुरूरवार्द्रव) आदि नामयुक्त हो और दक्षप्रजापतिकी विश्वाभिधा नाम पुत्रीमें धर्मके सकाशसे उत्पन्न हुये हो सो (अस्मिन् बर्हिषि) इस कुशारूप आसनमें (आसद्य) बैठके (मादयध्वम्) हर्षित होवो अर्थात् प्रसन्न होवो । इति मंत्रार्थः । यदि ऊपर लिखे हुये उत्पत्ति नाम विश्वेदेवोंको नहीं जानता होवे तो (आगच्छंतु महाभागाः)इसश्लोकको

पढ़े । फिर अपसव्यादि करके तिल हाथमें लेवे और (पितॄनावाहयिष्ये) ऐसा उच्चारण करे तथा(उशंतस्त्वा) इस मंत्रको पढे (उशंतस्त्वा) इसका अर्थ—हे अग्निदेव ! (त्वा) तुम्हारेको (निधीमहि) हम स्थापन करते हैं और कैसे हम हैं कि (उशंतः)आपकी इच्छा करनेवालेहैं और आपको(समिधीमहि)प्रज्वलित करते हैं हमारे करके जलायेहुये आप (पितॄन्) अग्निष्वात्त आदि पितरोंको (आवह) बुलावो। कैसे आप हो कि, पितरोंकी (उशन्) इच्छा करनेवाले हो और आपकी पितर इच्छा करतेहैं किसवास्ते हम बुलाते हैं कि (हविषे) हमारे दिये हुये हविष्यान्नके (अत्तवे) खानेके अर्थ अर्थात् हे अग्ने ! हमारे इस श्राद्धमें पितरोंको बुलादो और हमारा दिया हुवा अन्न उनको प्राप्त करो। इति भावार्थः । इसतरह पितरोंका आवाहन करके (अपहता) इस मन्त्रसे तिल विकिरण करे और (आयंतुनः) इस मन्त्रको पढे (आयंतुनः)

इस मंत्रका अर्थ--(नः) हमारे (पितरः) पितृगणहैं सो (आयंतु) आवो कैसे पितरहैं कि, (सोम्यासः) सोमपा नामवाले और अमृत पान करनेवाले हैं परन्तु केवल सोमपाही नहीं हैं किंतु (अग्निष्वात्ताः) इस नामवाले अर्थात् वैदिक यज्ञोंसे तर्पित अग्निद्वारा तृप्ति होनेवाले हैं सो (देवयानैः पथिभिः) देवोंके आनेवाले रस्तोंसे आवो और आकरके (अस्मिन् यज्ञे) इस श्राद्धरूप यज्ञमें (स्वधया) स्वधाद्वारा अन्न करके (मदंतः) तृप्त होतेहुये (अस्मान्) हमको (अधिब्रुवन्तु) श्लाघायुक्त करो और हमारी पालना करो। इति मन्त्रार्थः ॥

ततः सव्यापसव्याभ्यामर्घ्यपात्रेष्वष्टसुदर्भपवित्रमेकैकमुपरिधृत्वाॐशन्नोदेवीरभिष्टयऽआपोभवन्तुपीतये॥ शंयोरभिस्रवन्तुनः। इतिप्रत्येकंजलंप्रक्षिप्य देवपात्रेषु ॐयवोसियवयास्मद्द्वेषोयवयारातीः । इतियवान् विकीर्य्य ।

पित्रादिपात्रषट्के ॐतिलोऽसिसोमदैवत्योगो-सवोदेवनिर्मितः॥प्रत्नमद्भिःप्रक्तःस्वधयापितॄँ-ल्लोकान्प्रीणाहिनःस्वधानमः । इति तिलान्प्र-क्षिपेत्।ततोऽष्टसुपात्रेषुतूष्णीमेव गंधपुष्पतु-लसीदलानिनिक्षिपेत् । ततःसव्येनॐदेवार्घ-पात्रसंपत्तिरस्तु इतिपठित्वा । प्रथमंदेवार्घ-पात्रं वामहस्ते कृत्वा तत्रस्थं पवित्रंदेवपात्रे-दत्त्वा किंचिदुदकंच दत्त्वाॐयादिव्या आपःप-यसासंबभूवुर्याऽअन्तरिक्षाउतपार्थिवीर्याःहिर-ण्यवर्णायज्ञियास्तानऽआपःशिवाःशꣳस्योनाः सुहवाभवन्तु॥इतिमंत्रेणाभिमंत्र्य । कुशत्रय यवजलान्यादाय ॥

भाषाभावार्थ--इसतरह पितरोंकेआवाहन करनेके अनंतर सव्य और अपसव्यादि द्वारा आठ अर्घपात्रोंमें दर्भका एक एक पवित्रा धरै पवित्रनाम--जुडे हुये तीन पत्तोंमेंसे बीचका पत्ता निकाल देवै और प्रादेशमात्रदो

पत्ताअग्रभाग सहित होवैं उसका है और गांठदीहुईका नाम नहीं है गांठ तो केवल पात्रके अन्दरमें जानेके अर्थइकट्ठी करणे वास्ते दीजाती है सो कात्यायनस्मृतिका प्रमाण देतेहैं (अनन्तर्गर्भिणं साग्रं कौशं द्विदलमेवच ॥ प्रादेशमात्रं विज्ञेयं पवित्रं यत्र कुत्रचित् ॥ एतदेवहि पिंजूल्या लक्षणं समुदाहृतम्) फिर सर्वपात्रों में (शन्नोदेवी)इस मंत्रको पढके एक २ के अंदर जल डाले (शन्नोदेवी) इस मंत्रका अर्थ--(देवी) दीप्तिमान् (आपः) जल देवताहैं सो (नः) हमारेको (अभीष्टये) संपूर्ण कामनाकी पूर्तिके अर्थ (पानाय) पीनेके अर्थ (शं) सुखके अर्थ (भवंतु) होवो और हमारे (शंयोः) कल्याण योगसे (स्रवंतु) गमन करो इति मंत्रार्थः ॥ पात्रोंमें जल डालनेके अनंतर सव्यहोके देवपात्र २ में (यवोसि) इस मंत्रसे यव (जौं) गेरै, फिर अपसव्य आदि करके पितृपात्रों में (तिलोसि) इसको पढ़के तिल डालना चाहिये (तिलोसि) इस

मंत्रका अर्थ–हे तिलधान्य ! तुम सोमदैवत्य हो अर्थात् तुम्हारा चन्द्रमा देवता मालिक है और गोसव स्वर्गको देनेवाले हो फिर (देवनिर्मितः) विष्णु भगवान् करके उत्पन्न भये हो और (अद्भिः प्रक्तः)जलकरके सींचा हुआ हो सो (नः) हमारे (पितॄँल्लोकान्) पिता दादा परदादा आदिको (प्रत्नं) बहुत दिनोंतक (स्वधया), अन्नकरके (प्रीणाहि) प्रसन्न करो इति । इस मन्त्रके और अन्तमें स्वाहा पद कई जगोंमें है सो योग्य नहीं कारण पितृकर्ममें स्वधाकाही विधान होनेसे स्वधाही देना चाहिये ॥

ॐ अद्यास्मत्पित्रादित्रयश्राद्धसंबंधिनः पुरूरवार्द्रवसंज्ञका विश्वेदेवा एष वो हस्तार्घःस्वाहा नमः,इति दक्षिणहस्तेन देवतीर्थेन पवित्रोपरि अर्घ्यं दत्त्वा पवित्रसहितमर्घ्यपात्रं देवपुरतः स्थापयेत् । एवमेवमातामहादिदेवेभ्योप्यर्घ्यं दद्यात्। ततोऽपसव्यादिना। ॐपि

आद्यर्घपात्रसंपत्तिरस्तुइतिपठित्वा। पितृपात्रं गृहीत्वा पवित्रं भोजनपात्रे दत्त्वा ॐ यादिव्याआप इत्यनेनाभिमंत्र्य द्विगुणभुग्नकुशत्रयतिलान्यादाय ॐ अद्यामुकगोत्र अस्मत्पितरमुकशर्मन् सपत्नीक वसुरूप एषते हस्तार्घः स्वधानमः। इतिदक्षिणहस्तस्थपितृतीर्थेन यथाजलं पतति तथा पवित्रोपरि सावशेषमर्घंदद्यात् अर्घपात्रं च पितृपुरतः स्थापयेत्।एवमेव पितामहादिपंचभ्योपि दद्यात्। ततःसव्यंकृत्वा ॐविश्वेभ्योदेवेभ्यः स्थानमसीत्युक्त्वा पवित्रजलयुतं देवार्घपात्रद्वयमासनदक्षिणपार्श्वे उत्तानं क्रमेण स्थापयेत्।

भाषाभावार्थ—पश्चात संपूर्ण पात्रोंमें मन्त्रोंके बिगर चंदन, पुष्प, तुलसी डाले फिर सव्य होके देवतोंका पहलापात्र दहने हाथसे बांयें हाथमें धारण करके तहां स्थित जो दर्भके दो पत्ता उनको देवतोंके अगाडी

पत्तेपै रक्खे और जलका छींटा देवै फिर अर्घपात्रको (यादिव्या) इसमंत्र से दूसरा हाथ पात्रके ऊपर रखके अभिमंत्रण करै। (यादिव्या) इसका भावार्थ–(या) जो (आपः) जलहै सो (पयसा) दूधसे (संबभूवुः) उत्पन्न होते भये और (दिवि) स्वर्गके विषे (अंतारिक्षे) आकाशमें (पार्थिवीः) पृथिवीके विषे उत्पन्न भयेहैं कैसे वे जलहैं कि (हिरण्यवर्णाः) सफेदवर्णवाले हैं और (यज्ञियाः) यज्ञअनुष्टानके योग्यहैं सो (नः) हमारेको (शिवाः) कल्याण करनेवाले और (शं) सुख देनेवाले (स्योनाः) आनंद करने लायक (सुहवा) ब्राह्मणके हाथमें अर्घ देनेयोग्य (भवंतु) होवो। इति मंत्रार्थः। अभिमंत्रण करनेके अनन्तर दक्षिणहाथमें कुशत्रय,यव, जल आदि लेके देशकाल आदिका उच्चारण करै और पिता आदि तीनोंके श्राद्ध संबंधि विश्वेदेवोंको ऊपर लिखे मुजब दाहने हाथमें पत्तेपै स्थित पवित्रके ऊपर देवतीर्थ करके अर्घ देदे

और अर्घपात्रको पवित्री जलसहित देवतोंके अगाडी स्थापन करदेवै।इसीतरह नानाके श्राद्धसबंधि विश्वेदेवोंको अर्घ्य देवै फिर अपसव्य आदि करके पिताके अर्घपात्रको ग्रहण करै औरपवित्राको लेके अगाडी पत्तेपर रक्खै और जलका छींटादेवे फिर(यादिव्या)इसमन्त्रसे मन्त्रके मोटक तिल जल लेवे और अपने पिताका गोत्र नाम उच्चारण करके पवित्रापै अर्घ देदेवै पश्चात् जलपवित्रा सहित अर्घपात्रको उसीके अगाडीरखेदेवे इसीतरहदादा,परदादा,नाना,परनाना,बूढ़ानाना इनको जुदा २ अर्घ देवै।फिर सव्य होकै (विश्वेभ्योदेवेभ्यः स्थानमसि)इसको पढके पवित्रा जलसहित देवोंके दोनोंपात्रों को अपने अपने दहने तरफ सूधाही स्थापन करदेवै.

ततोऽपसव्यादिना पितामहप्रपितामहार्घपात्र जलादीनि पितृपात्रे कृत्वा एवमेव प्रमातामहवृद्धप्रमातामहयोः पात्रस्थजलादीनि मातामहपात्रे कुर्यात् । ततः सव्यं कृत्वा प्राङ्मुखः

पुत्रकामः पितृपात्रस्थजलेनमुखमार्जनम्। आ-
युष्कामो दक्षिणपाणिना नेत्रांजनंच कुर्यात्।
वाजसनेयीतुॐआपः शिवाः शिवतमाःशां-
ताः शांततमास्ते कृण्वन्तु भेषजमित्यनेना-
भिषेकं कुर्यात् । ततोऽपसव्यंकृत्वा ॐपितृ-
भ्यः स्थानमसीतिपठित्वा प्रथमंपितृपात्रं
पित्रासनवामप्रदेशभूमावधोमुखं संस्थाप्य
तदुपरि पितामहपात्रं तदुपरि प्रपितामहपात्रं
च दद्यात् । एवं ॐमातामहेभ्यः स्थानमसी-
त्युक्त्वा मातामहपात्रंन्युब्जीकृत्यप्रमातामह-
वृद्धप्रमातामहपात्राभ्यामाच्छादयेत्एतानिष,
ट्पात्राणिदक्षिणादानपर्यंतंनोद्धरेन्नचालयेत् ।

भाषाभावार्थ—पश्चात् अपसव्यादि करके पिता-
मह (दादा) प्रपितामह (परदादा) के अर्घपात्रोंमें
स्थित जल,पुष्प, पवित्रा आदि सर्व हैं सो पिताके अर्घ
पात्रके विषे डाले और परनानेके तथा बूढेनानेके अर्घ

पात्रोंके जल पवित्र आदि नानेके पात्रमें डालदेवै फिर सव्य होके पूर्वको मुख करै और पुत्रकी इच्छा वाला पिताके अर्घपात्रके जलका मुखमें छींटा देवे और आयुकी कामना करनेवाला नेत्रोंको धोवै और यजुर्वेद वाजसनेयी शाखावाला कामना नहीं होवे तोभी (आपः शिवाः) इस मंत्रको पढके दर्भोंसे अपने शिरमें मार्जन करै फिर अपसव्य होके पिताके प्रथमपात्रको ग्रहण करै और (पितृभ्यः स्थानमसि)ऐसे पढके उसीके आसनके वामभागमें निराली जगह नीचेको मुख करके स्थापन करदेवै फिर दादेके पात्र और परदादेके पात्रको उसके ऊपर धीरेसे स्थापन करदेवै । इसीतरह नानेके पात्र (मातामहेभ्यः स्थानमसि) यही उच्चारण करके न्युब्ज(मुंधा)करदेवे और परनाने बूढेनानेके पात्रसेढक- देवै परन्तु मुंधेकिये हुये ६ पात्रोंको दक्षिणादानके समयतक छेडे नहीं और सूधा नहीं करै ॥

अथगंधादिदानम् ॥ सव्यादिकृत्वागंधपु-

ष्पधूपदीपादिकंधृत्वाकुशत्रययवजलान्यादा-
य ॐ अद्यास्मत्पित्रादित्रयश्राद्धसंबंधिनः
पुरूरवार्द्रवसंज्ञका विश्वेदेवाएतानिगंधपुष्प-
धूपदीपतांबूलयज्ञोपवीतवासांसिवोनमः ॥
इत्युच्चार्य्यगंधाद्युत्सृजेत् ॥ एवमेवमातामहा-
दिदेवेभ्योऽपिदद्यात् ॥ ततः कृतांजलिः कर्त्ता
विश्वेषांदेवानामर्च्चनंसंपूर्णमस्त्विति ब्रूयात् ॥
ततोऽपसव्यादिनापितृपक्षेगंधादिकंधृत्वाद्वि-
गुणभुग्नकुशत्रयतिलजलान्यादाय ॥ ॐअद्या-
मुकगोत्रअस्मत्पितरमुकशर्मन् सपत्नीक
वसुरूप एतानिगंधपुष्पधूपदीपतांबूलयज्ञो-
पवीतवासांसितुभ्यंस्वधा ॥ इति पित्रेगंधादि-
दत्त्वा एवमेवपितामहादिपंचभ्योपिदद्यात् ॥
ततः कृतांजलिर्भूत्वा ॐपितॄणामर्चनंसंपूर्णम-
स्त्वतिब्रूयात्॥ एवंगंधाद्यर्चनंविधायसव्या-

पसव्याभ्यांभोजनपात्रस्थापनदेशंसंमार्ज्यपा-
त्राणिदत्त्वागौरमृत्तिकया जलेनवाब्राह्मणादि-
षुचतुरस्रत्रिकोणवर्तुलमंडलानि आसनानिवे-
ष्टयित्वा कुर्यात् ॥

भाषाभावार्थ—अब गंधादि देनेकी विधि लिखतेहैं
प्रथम सव्य आदि करके गंध, पुष्प, धूप, दीप, नागरपान,
सुपारी, यज्ञोपवीत, वस्त्रआदि सामग्री देवोंके आसन-
पै रक्खै, फिर दहिनेहाथसे कुशत्रय यव जल लेके संक-
ल्पका उच्चारण करै और कहै कि हमारे पिता दादा
परदादाके श्राद्धसंबंधि आप विश्वेदेवदेवता हो सो यह
सामग्री गन्ध, पुष्प, धूप, दीप आदि ग्रहण करो और यह
सामग्री आपके अर्थ है, ऐसे कहके संकल्पका जल देवों-
के पास छोड देवै । इसीतरह नानाके विश्वेदेवोंके अर्थ
गंधादि प्रदान करै, फिर हाथ जोडके प्रार्थना करै कि
यह विश्वेदेवोंकी पूजन परिपूर्ण होवो, पश्चात् अप-
सव्य, दक्षिणमुख आदि करके पिताके आसनपै गन्ध,

पुष्प, धूप, दीप, तांबूल,यज्ञोपवीत, वस्त्र आदि स्थापन करै फिर मोदक, तिल, जल लेके पिताका गोत्र नाम उच्चारण करके कहै कि हे पितः! यह गन्ध पुष्प आदि संपूर्ण सामग्री आपके अर्थ है सो आप ग्रहण करो ऐसे उच्चारण करके संकल्पका जल पिताके आसनपै छोड देवै । इसी तरह पितामह, प्रपितामह, मातामह, प्रमातामह, वृद्धप्रमातामहके अर्थ जुदा २ गन्ध, पुष्प, धूप, दीप आदि रखके संकल्पद्वारा गोत्र नाम उच्चारण कर देदेवै । पश्चात् हाथ जोडके प्रार्थना करै और सव्य अपसव्य होके देव पितरोंके भोजनपात्र रखनेकी जगहको जलसे धोवे फिर भोजनपात्र देके सुफेद मट्टी या जलसे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्यको क्रमसे चतुरस्र, चंद्राकार, गोल, चक्राकार मंडल करै ॥

अथाग्नौकरणम् ॥ ॥ तत्रव्यंजनक्षारवर्जितं घृताक्तमुष्णं श्राद्धान्नाग्रभागंकांस्यपात्रेसमुद्धृत्य सव्येन (अपसव्येन वा) अग्नौकरणं

करिष्ये इति पठित्वा कुरुष्वेतिब्राह्मणानुज्ञातो भयक्रोधत्वरारहितःस्वदक्षिणकरेण रजतादिपात्रस्थजले ॐ अग्नयेकव्यवाहनायस्वाहा इदमग्नयेकव्यवाहनाय । ॐ सोमायपितृमते स्वाहाइदंसोमायपितृमते । इत्याहुतिद्वयंजुहुयात् । ततोहुतशेषमन्नं देवपात्रद्वये पित्रादिपात्रेषुचदत्त्वापिंडार्थमवशेषयेत् । (अत्रपरकीयभूमौश्राद्धकरणे ॐ इदमन्नमेतद्भूस्वामिपितृभ्योनम इति घृताद्यक्तमन्नं दर्भेषुदद्यात्) ततःसव्येनदेवपात्रयोः अपसव्येनपितृपात्रेषुच उष्णमन्नंसघृतमनेकव्यंजनयुतंसुशीतलजलसहितंयथावत्परिविष्य । मधुनाभिघार्य्य । ॐ मधुव्वाताऽऋतायते मधुक्षरन्ति सिंधवः। माध्वीर्न्नःसन्त्वोषधीः १ ॐमधुनक्तमुतोषसोमधुमत्पार्थिवर्ठ०रजः। मधुद्यौरस्तुनः पिता २ ॐ मधुमान्नोव्वनस्पतिर्म्मधुमाँऽ

अस्तुसूर्य्यः। माध्वीर्गावोभवन्तुनः ३ ॐमधु मधुमध्वित्यभिमंत्रयेत् ॥

भाषा भावार्थ—अग्नौकरण होमकी विधि लिखतेहैंः—प्रथम शाक, लवण, मरीच आदि जिनससे रहित हो और घृतसे तर हो गरम २ हो श्राद्धके अन्नमेंसे पहलेही लिया हुवाहो ऐसा अन्न चार ग्रासके अनुमान कांसेके पात्रमें रक्खे फिर सव्य होके भय, क्रोध, शीघ्रता इत्यादि त्यागके दाहने हाथसे चांदी, तामा आदिके पात्रस्थित जलमें (अग्नये कव्यवाहनाय० शोमाय पितृमते०) इन दो मंत्रोंसे दो आहुति देवै फिर पीछेको बचेहुये अन्नमेंसे थोडा २ सव्य होके देवापात्रोंमें अपसव्यसे पितरोंके छः पात्रोंमें देवे और बाकी बचाहुवा पिंडोंके अर्थ जुदा रखदेवै, पश्चात् सव्य आदिकरके देवोंके दो पात्रोंमें और अपसव्यसे पितरोंके छः पात्रोंमें रीतिके साथ घृतसे तर गरम २ अन्न अर्थात् पायस, हलवा, पूरी आदि और अनेक

तरहका व्यंजन अर्थात् शाक, दही, रायता, बडा, पकोरी आदि और ठंढा२जल जुदे २ पात्रोंमें स्थापन करे, फिर सहतको अन्नपर लगाके (मधुवाता०) इन तीन मंत्रोंको पढ़े और मधु मधु मधु ऐसे तीन बेर उच्चारण करके अन्नका अभिमन्त्रण अर्थात् अन्नको मधुसमान करै मधुवाता० इन मंत्रोंका अर्थ अगाडी लिखेंगे ॥

ततःसव्येन उत्तानपाणिभ्यांपित्रादिदेवपात्र-मालभ्य। ॐपृथिवीतेपात्रंद्यौरपिधानंब्राह्मण-स्यमुखेऽअमृतेऽअमृतंजुहोमिस्वाहा इतिजप्त्वा ॐइदंविष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधेपदम्।समूढम-स्यपाᳬंसुरेस्वाहा इत्येतांवैष्णवीमृचमुच्चार्य्या-ऽधोमुखंस्वाङ्गुष्ठमनखम्। ॐविष्णोहव्यᳬंरक्ष इतियजुषाऽन्नेनिवेश्य।इदमन्नम् । इमाआपः । इदमाज्यम्। एतत्सर्वंहविरित्युक्त्वा ॐअपहता-ऽअसुरारक्षाᳬंसिवेदिषदइतियवान् अन्नपात्रप-रितोविकीर्य्यवामेनकरेणपात्रंस्पृशेद्दक्षिणकरे-

णकुशत्रययवजलान्यादायॐअद्याऽस्मत्पित्रादित्रयश्राद्धसंबंधिनः पुरूरवार्द्रवसंज्ञका विश्वेदेवा इदमन्नंहव्यंसोपस्करंपरिविष्टममृतरूपं वः स्वाहानमः । इत्युदकंदेवतीर्थेनदेवदक्षिणभागेभूमौनिक्षिपेत् । एवमेवमातामहादिदेवेभ्योऽप्युत्सृजेत् ॥

भाषाभावार्थ–अन्न परोसनेके अनंतर सव्य होवे और प्रथम देवतोंके अन्नपात्रको दोनों सीधे हाथोंसे स्पर्श करके (पृथिवीते) इत्यादि दो मन्त्र पढे.(पृथिवी ते० इस मन्त्रका अर्थः–) हे हुतशेषान्न (ते) तुम्हारे पृथिवी है सो पात्रका आधार है अर्थात् पृथिवी तो नीचेका पात्र है और (द्यौरपिधानम्)आकाश है सो ऊपरका पात्र है इसवास्ते (ब्राह्मणस्य मुखे) ब्राह्मणके मुखरूप (अमृते) अभक्ष्यभक्षणादिरहित अग्निके विषे (अमृतम्) हुतशेष तुमको (जुहोमि) होमताहूँ सो सुहुत होवो॥(इदंविष्णुः इति) (इदम्) इन तीन

लोकोंको अर्थात् पृथ्वी, आकाश, स्वर्गको (विष्णुः) भगवान् विष्णु वामनावतारमें (विचक्रमे) मापता भया और (त्रेधा) तीन तरहसे (पदम्) पदोंको (निदधे)स्थापन करताभया और(अस्य)इस लोकके (पांसुरे)धूलि मट्टीके विषे चरणकमलको (समूढम्) प्राप्त करते भये, इसवास्ते यह अन्नभी विष्णुके चरणसे शुद्ध किया हुवाहै सो यहांसे राक्षसगण दूर होवो। इति मन्त्रार्थः । पश्चात् अपने दहने हाथके नीचेको मुख करके नखरहित अंगूठेको (विष्णो हव्यं रक्ष) इस यजुर्वेदके मंत्रसे अन्नके ऊपर लगावे और यह अन्न है, यह जल है, यह घृत है, यह संपूण द्रव्य हवि है अर्थात् देवतोंके योग्य है; ऐसे पढके(अपहताः)इस मंत्र करके अन्न पात्रके बाहरकर यवविकिरण करै और बांयें हाथसे अन्नपात्रको नहीं त्यागताहुवा दाहने हाथमें कुशात्रय, यव, जल लेके ऊपरके संकल्पद्वारा विश्वेदेवोंके अर्थ सामग्रीसहित अन्नका त्याग करै, इस

तरह नानाके विश्वेदेवोंके अर्थ अन्नका संकल्प लेवै ॥

ततोऽपसव्यादिना पितृपात्रंन्युब्जपाणिभ्यां व्यस्ताभ्यांस्पृष्ट्वा ॐपृथिवीतेपात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्यमुखेऽअमृतेऽअमृतंजुहोमिस्वधाइति पठित्वा ॐइदंविष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधेपदम्। समूढमस्यपा ꣳसुरेइत्येतामृचंचजप्त्वास्वाङ्गुष्ठमधोमुखमनखं ॐविष्णोकव्यꣳरक्ष इतियजुषाऽन्नेनिवेश्य।इदमन्नम्।इमा आपः।इदमाज्यम्। एतत्सर्वंकव्यमितिपठित्वा ॐ अपहताऽअसुरारक्षा ꣳसिवेदिषद इतितिलान् अन्नपात्रपारितोऽप्रदक्षिणेनविकीर्य्य वामकरेणपात्रंस्पृशन् दक्षिणकरेण द्विगुणभुग्नकुशत्रयतिलजलान्यादाय ॐ अद्यामुकगोत्र अस्मत्पितरमुकशर्मन् सपत्नीक वसुरूप इदमन्नं कव्यंसोपस्करं परिविष्टममृतरूपं तुभ्यंस्वधा इत्युदकंपितृतीर्थेन

पित्रासनवामभागे भूमौ निक्षिपेत् । एवमेव पितामहादिपंचभ्योऽप्युत्सृजेत् ॥

भाषाभावार्थ--फिर अपसव्य आदि करके प्रथम पिताके अन्नपात्रको ऊँधे दोनों हाथोंसे अर्थात् बायें हाथसे पात्रके पश्चिम किनारेको और उसीके ऊपर करते हुये दाहने हाथसे पूर्वके किनारेको स्पर्श करके (पृथिवीते) (इदंविष्णुः) इत्यादि मंत्रोंको पढ़ै और (विष्णो कव्यंरक्ष) इस यजुर्वेदके मन्त्र-करके दाहने हाथके ऊन्धे अंगूठेको अन्नके विषे लगावै और (इदमन्नम्) इत्यादि पढ़के अन्नको बाहर कर (अपहताः) इस मन्त्रसे तिलविकिरण करै ॥ (अपहता इस मन्त्रका अर्थः--) (असुराः) दैत्यगण (रक्षांःसि) राक्षसगण (वेदिषदः) श्राद्धयोग्य भूमिमें विघ्नकरनेवाले (अपहताः) यहांसे दूर होवो इति मंत्रार्थः । पश्चात् अन्नपात्रको बांयें हाथसे स्पर्श किया हुआ दाहने हाथमें मोटक, तिल, जल लेवे और

अपने पिताका गोत्र नाम उच्चारण करके संकल्पद्वारा पातके अर्थ उपस्करसहित अन्नका त्याग करै और संकल्पका जल पिताके वामभागमें छोडदेवै। इसी-तरह, दादा, परदादा, नाना, परनाना, बूढानानाके गोत्र नाम उच्चारण करके जुदे जुदे संकल्पद्वारा अन्नका त्याग करै ॥

ततः ॐअन्नहीनंक्रियाहीनंविधिहीनंचयद्भवे-त् ॥ तत्सर्वमच्छिद्रमस्तुइतिप्रार्थ्य। सव्येन व्याहृतित्रयपूर्वां सप्रणवां गायत्रीं त्रिःसकृद्वा जपेत्। तथापवित्रपाणिर्दर्भेष्वासीनः। ॐम-धुव्वाताऽऋतायतेमधुक्षरन्तिसिंधवः।माध्वीर्न्न-सन्त्वोषधीः ॥ १ ॥ ॐमधुनक्तमुतोषसोम-धुमत्पार्थिवर्ठ्रजः॥मधुद्यौरस्तुनःपिता॥२॥ ॐ मधुमान्नोवनस्पतिर्मधुमाँऽअस्तुसूर्य्यः ॥ माध्वीर्गावोभवन्तुनः॥३॥ इति त्र्यृचम्॥ॐ मधुमधुमध्वितिचजपेत्।ततः। ॐकृणुष्वपाजः

प्रसितिन्नपृथ्वीं॑य्याहिराजेवामवाँऽइभेन।तृष्वी
मनुप्प्रसितिन्द्रूणानोस्तासिविध्यरक्षसस्तपिष्ठैः
१ तवभ्रमासऽआशुयापतन्त्यनुस्पृशधृषता
शोशुचानः॥ तपूंष्यग्नेजुह्वापतंगानसंदितो
विसृजव्विष्वगुल्काः२प्रतिस्पशोविसृजतूर्णित-
मोभवापायुर्विशोऽअस्याऽअदब्धः।योनोदूरेऽ
अघशंसोयोऽअन्त्यग्नेमाकिष्टेव्यथिरादध-
र्षीत्३ उदग्नेतिष्ठप्रत्यातनुष्वन्यमित्राँ२ऽओ-
षतात्तिग्महेते । योनोऽअरातिंसमिधानच
क्रेनीचातंधक्ष्यतसन्नशुष्कम्४ ऊर्ध्वोभवप्रति
विद्ध्याध्यस्मदाविष्कृणुष्वदैव्यान्यग्ने।अव
स्थिरातनुहियातुजूनाञ्जामिमजामिम्प्रमृणी-
हि शत्रून्।अग्नेष्ट्वातेजसासादयामि५इतिरक्षो-
घ्नीः पंचऋचः पठित्वा। भूमिंतिलैरास्तीर्यपि-
त्रादीन्ध्यायेत् ॥

भाषाभावार्थ—अन्नका त्याग करनेके अनन्तर

(अन्नहीनम्) इस श्लोकको पढै, फिर सव्य होके तीन व्याहृति ॐकारसहित तीनबेर या एक बेर गायत्रीका जप करै और (मधुवाता) इत्यादि तीन मन्त्र (कृणुष्वपाजः) इत्यादि पांच मन्त्रोंको पढै । (मधुवाता इत्यादिका) अर्थः– (वाता) वायुदेवता (ऋतायते) यजमानके अर्थ(मधु)मधुके बहनेवाला हो और(सिंधवः) गंगा यमुनाआदि नदियां मधु बहन करो (औषधीः) यव धान्य आदि (नः) हमारेको मधुर होवो और (नक्तं) रात्रि (मधुयुक्ता) रसवाली होवो (उषसः) प्रातःकाल प्रकाशयुक्त होवो (पार्थिवं रजः) पृथिवी लोकमाताके तुल्य पालनमें और (द्यौः) स्वर्गलोक पिताकी माफिक होवो और (वनस्पतिः) पीपल वट आदि अथवा सोमदेवता रसको देनेवाला होवो(सूर्यः) सूर्यदेवता घामतापआदिरहित करो (गावः) सूर्यकी किरणें शीतल अर्थात् अमृतयुक्त होवो और यह अन्न

पितरोंको मधुसमान मिष्ट होवो इति मन्त्रार्थः ॥

ततः ॐ उदीरतामवरऽउत्परासऽउन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः। असुंय्यऽईयुरवृकाऽऋतज्ञास्तेनोवन्तु पितरोहवेषु १ अङ्गिरसोनः पितरोनवग्वाऽअथर्वाणोभृगवः सोम्यासः तेषांवयर्ठ्ठसुमतौयज्ञियानामपिभद्रेसौमनसेस्याम॥२॥येनः पूर्वेपितरः सोम्यासोनूहिरेसोमपीथंवसिष्ठाः। तेभिर्य्यमः सर्ठ्ठरराणोहवीर्ठ्ठष्युशन्नुशद्भिः प्रतिकाममत्तु ३ त्वर्ठ्ठसोमप्रचिकितोमनीषात्वार्ठ्ठरजिष्ठमनुनेषिपंथाम्। तवप्रणीतीपितरोनऽइन्दोदेवेषुरत्नमभजन्तधीराः ४ त्वयाहिनः पितरः सोमपूर्वेकर्म्माणिचक्रुः पवमानधीराः। वन्न्वन्नवातः परिधीर्ठ्ठरपोर्णुवीरेभिरश्वैर्मघवाभवानः ५ त्वर्ठ्ठसोमपितृभिः संविदानोनुद्यावापृथिवीऽआततंथ। तस्मैतऽइन्दोहविषाविधेमवयर्ठ्ठ

स्यामपतयोरयीणाम् ६ बर्हिषदः पितरऽऊ-
त्यर्व्वागिमावोहव्याचकृमाजुषद्ध्वम् ।तऽआग-
तावसाशन्तमेनाथानः शंय्योररपोदधात ७
आहम्पितृन्सुविदत्राँ२ऽअवित्सिनपातञ्चव्वि-
क्रमणंचविष्णोः। बर्हिषदोयेस्वधयासुतस्यभ
जन्तपित्वस्तऽइहागमिष्ठाः ८ उपहूताःपितरः
सोम्यासोबर्हिष्येषुनिधिषुप्रियेषु । तऽआग-
मन्तुतऽइहश्रुवन्त्वधिब्रुवन्तुतेवन्त्वस्मान् ९
आयन्तुनःपितरःसोम्यासोऽग्निष्वात्ताःपथि-
भिर्द्देवयानैः।अस्मिन्यज्ञेस्वधयामदन्तोधिब्रु-
वन्तुतेवन्त्वस्मान् १० अग्निष्वात्ताः पितरऽ-
एहगच्छतसदःसदःसदतसुप्रणीतयः । अत्ता-
हवींषिप्रयतानिबर्हिष्यथारयिꣳ सर्ववीरं
दधातन ११ येऽअग्निष्वात्तायेऽअनग्निष्वात्ता
मद्ध्येदिवःस्वधयामादयन्ते। तेभ्यःस्वराडसु-
नीतिमेतांयथावशन्तन्वङ्कल्पयाति १२ अग्नि-

ष्वात्तानृतुमतोहवामहेनाराशर्ठ॰सेसोमपीथं
य्यऽआशुः।तेनोविप्रासः सुहवाभवन्तुव्वयꣳ
स्यामपतयोरयीणाम् १३ इतिपितृमंत्रान् ।
ॐसहस्रशीर्षापुरुषःसहस्राक्षःसहस्रपात्।सभू-
मिर्ठ॰ सर्वतस्पृत्वात्यतिष्ठद्दशांगुलम् इत्या-
दिषोडशऋचात्मकंपुरुषसूक्तम् ॥ ॐ आ-
शुः शिशानोवृषभोनभीमोघनाघनः क्षोभ-
णश्चर्षणीनाम्। संक्रन्दनोनिमिषऽएकवीरःश-
तर्ठ॰ सेनाऽअजयत्साकमिन्द्रइत्यादिसप्तदश
मंत्रात्मकमप्रतिरथंचपठेत् । ततः ॐसप्तव्या-
धादशार्णेषु मृगाःकालञ्जरेगिरौ॥चक्रवाकाः
शरद्वीपेहंसाःसरसिमानसे१तेभिजाताःकुरुक्षे-
त्रेब्राह्मणावेदपारगाः॥प्रस्थितादूरमध्वानंयूयंते
भ्योऽवसीदत इतिहविःस्तोत्रम् । ॐयोगीश्व-
रंयाज्ञवल्क्यंसंपूज्यमुनयोऽब्रुवन् । वर्णाश्रमे-
तराणांनोब्रूहिधर्मानशेषतः॥मन्वत्रिविष्णुहा-

रीतयाज्ञवल्क्योशनोङ्गिराः ॥ यमापस्तंबसं-
वर्त्ताःकात्यायनबृहस्पती॥पराशरव्यासशंख-
लिखितादक्षगौतमौ।शातातपोवसिष्ठश्चधर्मशा-
स्त्रप्रयोजकाः ॥इतियाज्ञवल्कीयगाथांचपठि-
त्वासप्तार्चिस्स्तवंपठेत्।ॐअमूर्त्तानांचमूर्त्तानां
पितॄणांदीप्ततेजसाम् ।नमस्यामिसदातेषांध्या
यिनांदिव्यचक्षुषाम्॥ १॥इंद्रादीनांचनेतारोद-
क्षमारीचयोस्तथा ।सप्तर्षीणांतथान्येषां तान्न-
मस्यामिकामदान्॥२॥मन्वादीनांमुनींद्राणां
सूर्याचंद्रमसोस्तथा।तान्नमस्याम्यहंसर्वान्पि-
तरश्चार्णवेषुच ॥३॥नक्षत्राणांग्रहाणांचवाय्व-
ग्न्योर्नभसस्तथा।द्यावापृथिव्योश्चतथानमस्या-
मिकृताञ्जलिः॥४॥देवर्षीणांग्रहाणांचसर्वलो-
कनमस्कृतान्।अभयस्यसदादातॄन्नमस्येहंकृता-
ञ्जलिः॥५॥प्रजापतयेकश्यपायसोमायवरुणाय
च॥योगेश्वरेभ्यश्चसदानमस्यामिकृताञ्जलिः ६

नमोगणेभ्यःसप्तभ्यस्तथालोकेषुसप्तसु॥स्वयं
भुवेनमस्यामि ब्रह्मणेयोगचक्षुषे॥७॥सोमाधा-
रान्पितृगणान्योगमूर्तिधरांस्तथा॥नमस्यामि
तथासोमं पितरंजगतामहम् ॥८॥ अग्निरू-
पांस्तथैवान्यान्नमस्यामिपितॄनहम्॥अग्नीषो-
ममयंविश्वंयतएतदशेषतः ॥९॥ येतुतेजसि
येचैतेसोमसूर्याग्निमूर्त्तयः ॥ जगत्स्वरूपिण-
श्चैवतथाब्रह्मस्वरूपिणः॥१०॥तेभ्योऽखिलेभ्यो
योगिभ्यःपितृभ्योयतमानसः॥नमोनमोनम-
स्तेमेप्रसीदंतुस्वधाभुजः॥११॥पितरऊचुः ॥
स्तोत्रेणानेनचनरोयोऽस्मान्स्तोष्यतिभक्तितः॥
तस्यतुष्टावयंभोगानात्मज्ञानंतथोत्तरम् १२॥
शरीरारोग्यमर्थंचपुत्रपौत्रादिकंतथा॥प्रदास्या-
मोनसंदेहोयच्चान्यदपिवांछितम्॥१३॥तस्मा-
त्पुण्यफलंलोकेवांछद्भिःसततंनरैः ॥ पितॄणां
चाक्षयांतृप्तिस्तव्यस्तोत्रेणमानवैः॥१४॥पठि-

ष्यंतिद्विजाग्र्याणांभुंजतांपुरतः स्थिताः॥अस्मा-
कमक्षयंश्राद्धंतद्भविष्यत्यसंशयम् ॥ १८ ॥
इति । ततोऽन्यान्यपिरुचिस्तोत्रब्रह्मविष्णुस्त-
वप्रभृतीनि यथारुचि यथाशक्ति पठेत्ततोऽ-
पसव्यादिकृत्वाऽच्छिष्टसन्निधौभूमिप्रोक्ष्यत-
त्रदक्षिणाग्रं कुशत्रयमास्तीर्य्य सर्वप्रकारमन्नं
सव्यंजनमुद्धृत्य सतिलमेकीकृत्य ॐ अग्नि-
दग्धाश्चयेजीवायेऽप्यदग्धाःकुलेमम॥भूमौद-
त्तेनतृप्यन्तुतृप्तायान्तुपरांगतिम् ॥१॥ इति-
मंत्रेणकुशोपरितदन्नंविकिरेत् ॥

भाषाभावार्थ—फिर (उदीरतामवर इत्यादि) तेरह
१३ मंत्र और (सहस्रशीर्षा इत्यादि) सोलह १६
मंत्र और (आशुः शिशानो इत्यादि) सतरह १७
मंत्रोंको पढ़ै, इसको अप्रतिरथ कहतेहैं पश्चात् (सन
व्याधा इत्यादि) (योगीश्वरम् इत्यादि) और (अमू-
र्त्तानामित्यादि) रुचिस्तोत्र और ब्रह्माविष्णुआदिके

उत्तम स्तोत्रोंका अपनी रुचिके माफिक पाठ करै फिर अपसव्यआदि करके पितरोंके भोजनपात्रके समीप जलसे पृथिवी शुद्ध करै और उसी जगे दक्षिणको अग्रभाग करके त्रिकुश रक्खे फिर सर्व तरहका अन्न व्यंजन तिल जलसहित लेके (अग्निदग्धा) इस मंत्रसे दर्भोके ऊपर अन्नको विकिरण करदेवै ॥

ततः सव्यंकृत्वा आचम्य हरिंस्मृत्वापूर्ववत् गायत्रीं मधुवाताऽऋतायते इत्यादित्र्यृचं मधु मधु मध्विवतिचपठेत् । ततोऽपसव्येन पित्राद्युच्छिष्टसंनिधौचतुरस्रं दक्षिणप्लवंरमणीयंहस्तमात्रंचतुरंगुलोच्छ्रितं पित्रादित्रयपिंडपातनार्थंसिकताभिः स्थानंनिर्मायतथामातामहाद्युच्छिष्टसन्निधौ मातामहादिपिंडपातनार्थंताहृशमेवस्थानंकुर्यात्।तत्रउभयत्रमध्यदेशेदर्भंपिंजुलीमूलेन । ॐ अपहताऽअसुरारक्षा ँ सिवेदिषद इतिमंत्रेण सव्योपगृही-

तद्दक्षिणहस्तेन दक्षिणाग्रांरेखांसकृत्सकृल्लिखि-त्वादर्भपिंजूलीमुत्तरस्यांदिशिनिक्षिप्य।ॐये-रूपाणिप्रति मुंचमानाऽअसुराः संतःस्वधया चरन्ति।परापुरोनिपुरोयेभरन्त्यग्निष्टाल्लोका-त्प्रणुदात्त्वस्मात् इतिमंत्रेणज्वलदुल्मुकंप्रत्ये-कंरेखोपरिभ्रामयित्वादक्षिणतोनिदध्यात् ॥

भाषाभावार्थ–पश्चात् सव्य होके आचमन और हरिका स्मरण करै और गायत्री (मधुवाता इत्यादि) तीन मंत्रोंको पढै। फिर अपसव्य करके पितरोंके भोजनपात्रके समीप चौकोण दक्षिणको नीचा और रमणीय चौबीश अंगुल लंबा और चौडा चार अंगुल ऊंचा एकस्थान अर्थात् वेदी सुफेद साफ मिट्टीसे बनावै फिर इसीतरह नानाके भोजनपात्रके समीप दूसरा स्थान बनावै और उन दोनों वेदियोंके बीचमें(पिंजुली) दोपत्तेवाली दर्भसे जुदी जुदी एक२ लकीर (अपहताः) इस मन्त्रको पढ़के बारह अंगुल लंबी और दक्षिणको

अग्रभाग करके निकालै और दर्भके उत्तरकी तरफ रखदेवै । फिर (ये रूपाणि) इस मन्त्रको पढ़के जलताहुवा तृण लेके दोनों रेखाओंपर जुदा २ भमाके दक्षिणको त्यागदेवै, (ये रूपाणि इसका भावार्थः-) (ये) जो (असुराः) दैत्य-गण अर्थात् देवपितरोंका वैरी (रूपाणि) अपने रूपोंको (मुंचमानाः) त्यागते हुये और पितृरूपको धारण करतेहुये (स्वधया) पितरोंके अन्नकी इच्छा करके (चरंति) विचरतेहैं और (परापुरः) स्थूल शरीरोंको त्यागके सूक्ष्म शरीरोंको (भरंति) धारतेहैं सो (अग्निः) यह उल्मुकरूप अग्नि (अ-स्मात् लोकात्) इस पितृयज्ञस्थानसे उन दैत्योंको (प्रणुदात्) दूरकरो इति मंत्रार्थः ॥

ततउपमूलसकृदाच्छिन्नदक्षिणाग्रकुशत्रयंरे-खोपरि स्तीर्त्वासव्येनदेवताभ्यइतित्रिर्जपेत्। ततोऽपसव्येनपुटकषट्केजलतिलगंधपुष्पा-

णि कृत्वा एकंपात्रंवामहस्तेकृत्वा। द्विगुणभुग्नकुशत्रयतिलजलान्यादाय। ॐअद्यामुकगोत्र अस्मत्पितरमुकशर्मन् सपत्नीकवसुरूपअत्रा-ऽवनेनिक्ष्वतेस्वधा इति कुशमूले पित्रे पितृतीर्थेनअवनेजनंदद्यात् एवंपितामहायकुशत्रयमध्ये प्रपितामहायकुशाग्रे अवनेजनंदद्यात्। एवमेवमातामहादिभ्योपिदद्यात्। ततःसर्वस्माच्छ्राद्धशेषान्नादुष्णं किंचित्किंचिदन्नमुद्धृत्यमध्वाज्यतिलसर्वव्यंजनयुतं रजतादिपात्रे कृत्वा बिल्वोपमान्षट्पिंडान्निर्माय मधुघृताभ्यामभिघार्य्यपित्रादिभ्योदद्यात् ॥

भाषाभावार्थ—फिर (उपमूल) जलके समीपसे सुफेद रंगयुक्त अच्छीतरहसे छेदन कराहुवा हो और पत्ता जुडा हुआ हो ऐसा तीन पत्ता दक्षिणको अग्रभाग करके जुदी २ वेदियें स्थापन करै और सव्य होके (देवताभ्यः) इस मन्त्रको तीन बेर जपै । पश्चात्

अपसव्य करके छः पात्रोंमें जल, तिल, चन्दन, पुष्प आदि घाले और एक पात्रको दाहने हाथ बामें हाथमें रखै, फिर दक्षिण हाथमें मोटक, तिल, जल लेके पिताका गोत्र नाम उच्चारण करै और प्रथम वेदीके कुशमूलमें पितृतीर्थसे थोडा जल अवनेजनके निमित्त दाहने हाथसे देदेवे, इसीतरह कुशाके बीचमें दादेके अर्थ और कुशाके अग्रभागमें परदादेके निमित्त जुदे पात्रसे अवनेजन देवै और उसीतरह दूसरी वेदीकी कुशामें नानेआदिको अवनेजन देवै। पश्चात् संपूर्ण श्राद्धके अन्नमेंसे गरम २ थोडा २ अन्न लेके एक पात्रमें रक्खै और उसमें सहत, घृत, तिल, व्यंजन शाक आदि सारे पदार्थ मिलावे, फिर उसका बिल्वकी माफिक गोल छह ६ पिंड बनवावै और सहत घृतका पिंडोंपै मालस करदेवै ॥

तत्रप्रथमपिंडंद्विगुणभुग्नकुशत्रयादीनिचादाय।

ॐअद्यामुकगोत्र अस्मत्पितरमुकशर्मन् सप-

त्नीकवसुरूपएतत्तेपिंडंस्वधा । इतिप्रथमाव-
नेजनस्थानेसव्योपगृहीतदक्षिणहस्तेनपितृती-
र्थेनदद्यात् । एवमेवपितामहादिभ्यः पंचभ्यः
प्रत्येकंतत्तदवनेजनस्थानेपिंडंदद्यात् । ततः
प्रपितामहादूर्ध्वंत्रयाणांलेपभुजांतृप्तिमुद्दिश्य
पित्रादिकपिंडाधारकुशमूले ॐलेपभागभुजः
पितरस्तृप्यन्तु इतिपठित्वा हस्तंप्रोक्ष्य
जलेनहस्तौप्रक्षालयेत्ततःसव्यंकृत्वात्रिराच-
म्यहरिंस्मरेत् । ततोऽपसव्येन ॐ अत्रपित-
रोमादयध्वंयथाभागमावृषायध्वम् । इति
पित्रुद्देशेनपठित्वावामावर्तेनोदङ्मुखीभूयप्रीत-
मनामनाक् श्वासंनियम्य तेनैवपथापरावृत्य
ॐ अमीमदन्तपितरोयथाभागमावृषायिषत
इतिजपेत् । एवंमातामहपक्षेपिमंत्रोहंकुर्यात्॥

भाषाभावार्थ—पिंड देनेकी विधि लिखतेहैं-प्रथम
पिंड और मोटक तिल जल दाहने हाथमें लेकै अपने

पिताका गोत्र नाम उच्चारण करै और कहे कि हे पितः स्त्रीसहित आपके अर्थ यह पिंड है ग्रहण करो ऐसे कहके पहले अवनेजनस्थानमें बायें हाथको दाहने हाथसे स्पर्श करता हुवा दाहने हाथके अंगूठे और अगली अंगुलीके बीचसे पिंड दर्भपै रखदेवै। इसीतरह दादे परदादे नाने परनाने बुड्ढेनानेके अर्थ जुदा२ पिंड अपने २ अवनेजनस्थानमें दर्भोंपै स्थापन करदेवै। पश्चात् परदादेसे ऊपरके तीन पुरुषोंकी तृप्ति चाहता हुवा पिताके पिंडके समीप दर्भकी जडमें (लेपभाग-भुजस्तृप्यन्तु) यह मन्त्र पढके दाहने हाथके लगा-हुवा अन्न दर्भआदिसे पोंछदेवै फिर जलसे दोनों हाथ मिलाके प्रक्षालन करै और शुद्ध होके सव्यसे नौ बेर आचमन और विष्णुका स्मरण करे। पश्चात् अप-सव्य होके पितरोंके निमित्त लेके (अत्र पितरो) इसमन्त्रको पढे और बायेंतरफसे उत्तरको मुख करा हुवा प्रसन्न मनसे मौन धारके श्वासको बन्द करै फिर

उसी तरह पीछा हटके (अमीमदन्त) इसमन्त्रसे प्रथम पिंडपै श्वास छोडदेवै, इसी तरह दादे परदादे नाने परनाने बुड्ढे नानेके पिंडपर जुदा २ मन्त्र पढके जुदा२ श्वास त्यागना चाहिये(अत्र पितरो इसका अर्थः—(पितरः) हे पितर (अत्र) इस पिंडमें अथवा कुशापै (मादयध्वं) प्रसन्न हर्षयुक्त होवो और (यथाभागं) अपने२ भाग (हिस्से) को प्राप्त होके (आवृषायध्वं) चारोंतरफसे ग्रहण करो अर्थात् जैसे बैल अपने योग्य घासको देखके तृप्तिपर्यंत खाता है वैसे ही आप तृप्तिपर्यंत अन्नको स्वीकार करो।(अमीमदन्त इति) जिनपितरोंके प्रति (मादयध्वं) प्रसन्नताकी इच्छा करते हैं वे पितर लोग (अमीमदन्त) मेरे दियेहुये पिंड करके प्रसन्न होवो और अपने २भागको लेके (वृषायिषत) वृषभ (बैल) की तरह बलवान् होवो ॥ इति मंत्रार्थः॥

ततः पूर्वंदत्तावनेजनपात्रस्थजलेन ॐअद्यामुकगोत्रअस्मत्पितरमुकशर्मन् सपत्नीकवसुरूप

अत्रप्रत्यवनेनिक्ष्वतेस्वधाइति प्रथमपिंडोपरि प्रत्यवनेजनंदत्त्वा एवमेवपितामहादिपिंडोपरितत्तदवनेजनपात्रेणप्रत्येकं प्रत्यवनेजनंदद्यात् ततोनीवींविस्रंस्यसव्येनआचम्यअपसव्यं कृत्वाॐनमोवःपितरोरसायनमोवःपितरःशोषायनमोवःपितरोजीवायनमोवः पितरःस्वधायैनमोवःपितरोघोरायनमोवः पितरोमन्यवेनमोवःपितरःपितरोनमोवोगृहान्नः पितरोदत्तसतोवः पितरोदेष्मइतिकृताञ्जलिः पठेत् ।

फिर पहले दियेहुये अवनेजन पात्रको लेके पिताके गोत्र नाम उच्चारण करता हुआ पात्रका जल पिताके पिंडपै गेरे,इसको प्रत्यवनेजन कहतेहैं,इसीतरह दादेआदिके पांच पिंडोंपै जुदे २ पात्रसे जुदा जल देवै पश्चात (नीवी) कटिवस्त्रमें स्थापन कियेहुये तिलदर्भका त्याग करै और सव्य करके आचमन करै फिर अपसव्य

होके (नमोवः पितरो) इस मन्त्रसे प्रार्थना करैं (मंत्रका अर्थ–(पितरः) हे पितर (वः) तुम्हारे(रसाय) रसरूपवसन्तऋतुके अर्थ (नमः) नमस्कार है और (शोषाय) ग्रीष्मऋतुके अर्थ (जीवाय) जीवदान देनेवाली वर्षाऋतुके अर्थ (स्वधायै) शरदृऋतुरूपके और (घोराय) विशेष शरदीयुक्त हेमंतरूपके अर्थ (मन्यवे) क्रोधरूपी शिशिर ऋतुके अर्थ नमस्कार है अर्थात् इन ऋतुरूपवाले आप पितर हो सो आपको नमस्कार करतेहैं सो हे पितर ! (नो अस्मभ्यं) हमारे अर्थ (गृहान्) स्त्री पुत्र पौत्र धन आदि देवो और (वो युष्मभ्यं) आपके अर्थ (सतः) प्राप्त हुये धन आदिको हम (देष्म) देते रहैं और हमारा स्त्री पुत्रपौत्र धन आदिका नाश कभी मत होवे। इति मंत्रार्थः ॥

ततः ॐएतद्वः पितरोवासइतिपठित्वाषट्सुपिंडेषुसूत्राणि प्रतिपिंडमूर्णादशां वा पंचाशदूर्ध्ववयस्कयजमानहृदयलोमानिवादद्यात् ततो

द्विगुणभुग्नकुशत्रयतिलजलान्यादाय ॐ अ-
द्यामुकगोत्र अस्मत्पितरमुकशर्मन् सपत्नी-
क वसुरूप एतत्तेवासः स्वधाइति सू-
त्रमुत्सृजेत् । एवमेवपितामहादिपंचसु
पिंडेषुतत्तन्नाम्नोत्सृजेत् । ततः पित्रादीनुद्दि-
श्यतदीयपिंडेषु तूष्णींगंधपुष्पधूपदीपतांबूल-
दक्षिणादीनिदद्यात्। पिंडशेषान्नंचपिंडसमीपे
विकिरेत् । ततः सव्यापसव्याभ्यां देवपितृ-
भोजनपात्रेषु ॐशिवाआपः संतुइतिसकृत्स-
कृज्जलंदद्यात् ॐ सौमनस्यमस्तु इतिपुष्पा-
णि । ॐअक्षतंचारिष्टमस्त्वितियवांश्च दद्या-
त् (न तंडुलान्) ततः ॐअद्यामुकगोत्रस्या-
स्मत्पितुरमुकशर्मणः सपत्नीकस्य वसुरूप-
स्यदत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्त्विति सतिल-
मक्षय्योदकंभोजनपात्रेदद्यात् एवमेवपिताम-
हादीनांनामगोत्राभ्यांतदीयभोजनपात्रेषु अ-
क्षय्योदकंदद्यात् ततः सव्यंकृत्वा ॥

भाषाभावार्थ–प्रार्थना करनेके अनंतर (एतद्वः पितरो वासः) इस मंत्रको पढे अर्थात् कहै कि हे पितर (वः) आपके अर्थ (एतत) यह (वासः) सूत्र पहरनेके लिये हैं। ऐसे कहके एक एक पिंडपै तीन तीन सूतके तार अथवा ऊनके तागे अथवा बुड्ढेयजमानके छातीके धोले बाल स्थापन करै और जुदा २ गोत्र नाम लेके संकल्परीतिसे पिता आदिके अर्थ सूत्रका त्याग करदेवै। पश्चात् पितरोंका उद्देश लेके संपूर्ण पिंडोंका गंध, चन्दन, पुष्प, तुलसी, धूप, दीप, तांबूल, सुपारी, दक्षिणाआदिसे पूजन करै और पिंडोंका शेष अन्न पिंडोंके समीप विकिरण कर देवै। फिर सव्य होके देवताके अन्नपात्रमें और अपसव्य होके पितृपात्रोंमें (शिवाआपः) इस मन्त्रसे थोडा२ जल देवै और (सौमनस्यं) यह पढके पुष्प गेरे (अक्षतं चारिष्टं) इस मन्त्रसे यव अन्नपात्रोंमें देवै परन्तु चावल नहीं देवै. यहां अक्षत नाम यवोंका है (अक्ष-

तास्तु यवाःप्रोक्ता इति कात्यायनवचनात्) (शिवा आपः) इत्यादिकोंका अर्थ—जलदेवता कल्याणके करनेवाले होवो और यह पुष्प चित्तको प्रसन्न रखो. (अक्षतं) यव धान्य है सो (आरिष्टं) सन्तान उत्पन्न करनेवाले घरको देवो अर्थात् सन्तानके देनेवाला होवो ('अरिष्टं सूतिकागृहम् इति अमरकोशात्') फिर मोटक तिल जल लेके षष्ठीविभक्तिके द्वारा पिताका गोत्र नाम उच्चारण करै और यह दियाहुवा अन्न जल आदि हमारे पिताके अर्थ अक्षय होवो ऐसे कहके संकल्पका जल अन्नपात्रमें छोड देवे, इसीतरह दादे-आदिके अर्थ अक्षय्योदक देना चाहिये ॥

प्राङ्मुखस्तन्मनाः कृताञ्जलिर्दक्षिणांदिशंप-श्यन् ॐअघोराःपितरः सन्त्वित्ति आशिषो गृह्णीयात्ॐगोत्रंनोवर्द्धतांदातारोनोऽभिवर्द्धं-तां वेदाःसन्ततिरेवच । श्रद्धाचनोमाव्यगमत् बहुदेयंचनोऽस्तु।अन्नंचनोबहुभवेदतिथींश्चलभे-

महि याचितारश्चनःसंतुमाऽस्मयाचिष्मकंचन ॥
एताः सत्याआशिषःसंतुइतिवदेत् । ततोऽ-
पसव्यंकृत्वा पिंडोपरिसपवित्रान्कुशानास्तीर्य
स्वधांवाचयिष्ये इति ब्रूयात् ॐपितृभ्यःपिता-
महेभ्यःप्रपितामहेभ्योमातामहेभ्यःप्रमातामा-
हेभ्योवृद्धप्रमातामहेभ्यश्च स्वधोच्यतामिति
उक्त्वा ॐऊर्ज्जंवहंतीरमृतंघृतंपयःकीलालंपरि-
स्रुतम् । स्वधास्थतर्प्पयतमेपितॄनितिसपवित्र-
कुशोपरिदक्षिणाग्रांजलधारांदद्यात् ॥

भाषाभावार्थ–पश्चात् सव्य करके पूर्वको मुख करै और एकाग्रचित्त होके अंजली किये हुए दक्षिणको देखता हुआ (अघोराः इस मंत्रको पढै अर्थात् हमारे पितर (अघोराः) सरलस्वभाववाले प्रसन्न-चित्तवाले होवो ऐसे कहके आशीः प्रार्थना करै (गोत्रं नो वर्द्धतां) इत्यादिका अर्थ–हे पितर ! (नोऽ

स्माकं) हमारा (गोत्रं) कुल बढै और हमारे कुलमें (दातरः) दान देनेवाले होवैं और वेदशास्त्रकी पढने पढानेसे उन्नति होवो, संततिकी वृद्धि होवो और हमारी देवपितृकार्योंसे श्रद्धा भक्ति दूर मत होवो हमारे द्रव्य धन आदि और अन्न धान्य नानाप्रकारके भक्ष्य भोज्य आदि बहुत होवो और हमारे घरमें अतिथि अभ्यागत भिक्षुक आदि नित्यप्रति आवो और याचकलोगोंकी याचना पूरी होवो परंतु हम किसीसे याचना करने वाले न होवैं और यह संपूर्ण आशिष् परिपूर्ण होवो इति । फिर-अपसव्य होके पिंडोंपै पवित्री सहित दर्भ रखके स्वधावाचन करे और (ऊर्ज्जंव- हंतीः) इस मन्त्रसे उत्तरसे लेके दक्षिणको जाती हुई दर्भपै जुदी २ जलधारा देवै । मन्त्रका अर्थ—हे जल- देव ! (अमृतं) रोगके अथवा मृत्युके नाश करने- वाले (कीलालं) बन्धको छुडाने वाले आप हो सो (ऊर्ज्जं) स्वादु २ अन्नके रसको और घृत दुग्ध बहाते

भये पितृरूप हवि होके पितरोंकी तृप्ति करो॥ इति मंत्रार्थः।

ततोब्राह्मणानुज्ञातःपिंडानुत्थाप्यस्थाल्यांनि-
धाय अवघ्राणं कृत्वा पिंडाधःस्थान् सकृदा-
च्छिन्नान्दर्भानुल्मुकद्वयंच वह्नौक्षिपेत् । ततः
स्वयंयजमानोऽर्घ्यपात्राण्युत्तानीकृत्य सव्ये-
नदेवदक्षिणांदद्यात्। ॐअद्याऽस्मत्पित्रादित्रय-
श्राद्धसंबंधिनां पुरूरवार्द्रवसंज्ञकानांविश्वेषांदे-
वानांकृतैतत्पार्वणश्राद्धप्रतिष्ठार्थमिदंहिरण्यम-
ग्निदैवतंयथानामगोत्रायब्राह्मणायदक्षिणात्वेन
दातुमहमुत्सृजे इतिसंकल्प्यदद्यात् एवंमाता-
महादिदेवश्राद्धदक्षिणामपिदद्यात् ततोपस-
व्यादिना ॐअद्यामुकगोत्रस्यास्मत्पितुरमु-
कशर्मणःसपत्नीकस्यवसुरूपस्य कृतैतत्पार्व-
णश्राद्धप्रतिष्ठार्थमिदं रजतंचंद्रदैवतं यथाना-
मगोत्रायब्राह्मणाय दक्षिणात्वेनदातुमहमुत्सृजे
इतिपितृदक्षिणां दद्यात्। एवमेवपितामहादिपं-

स्माकं) हमारा (गोत्रं) कुल बढै और हमारे कुलमें (दातरः) दान देनेवाले होवैं और वेदशास्त्रकी पढने पढानेसे उन्नति होवो, संततिकी वृद्धि होवो और हमारी देवपितृकार्योंसे श्रद्धा भक्ति दूर मत होवो हमारे द्रव्य धन आदि और अन्न धान्य नानाप्रकारके भक्ष्य भोज्य आदि बहुतं होवो और हमारे घरमें अतिथि अभ्यागत भिक्षुक आदि नित्यप्रति आवो और याचकलोगोंकी याचना पूरी होवो परंतु हम किसीसे याचना करने वाले न होवैं और यह संपूर्ण आशिष् परिपूर्ण होवो इति । फिर-अपसव्य होके पिंडोंपै पवित्री सहित दर्भ रखके स्वधावाचन करे और (ऊर्ज्जंव-हंतीः) इस मन्त्रसे उत्तरसे लेके दक्षिणको जाती हुई दर्भोंपै जुदी २ जलधारा देवै । मन्त्रका अर्थ—हे जल-देव ! (अमृतं) रोगके अथवा मृत्युके नाश करने-वाले (कीलालं) बन्धको छुडाने वाले आप हो सो (ऊर्ज्जं) स्वादु २ अन्नके रसको और घृत दुग्ध बहाते

भये पितृरूप हवि होके पितरोंकी तृप्ति करो॥ इति मंत्रार्थः।

ततोब्राह्मणानुज्ञातः पिंडानुत्थाप्यस्थाल्यांनिधाय अवघ्राणं कृत्वा पिंडाधःस्थान् सकृदाच्छिन्नान्दर्भानुल्मुकद्वयंच वह्नौक्षिपेत् । ततः स्वयंयजमानोऽर्घ्यपात्राण्युत्तानीकृत्य सव्येनदेवदक्षिणांदद्यात्। ॐअद्याऽस्मत्पित्रादित्रयश्राद्धसंबंधिनां पुरूरवार्द्रवसंज्ञकानांविश्वेषांदेवानांकृतैतत्पार्वणश्राद्धप्रतिष्ठार्थमिदंहिरण्यमग्निदैवतंयथानामगोत्रायब्राह्मणायदक्षिणात्वेन दातुमहमुत्सृजे इतिसंकल्प्यदद्यात् एवंमातामहादिदेवश्राद्धदक्षिणामपिदद्यात् ततोपसव्यादिना ॐअद्यामुकगोत्रस्यास्मत्पितुरमुकशर्मणःसपत्नीकस्यवसुरूपस्य कृतैतत्पार्वणश्राद्धप्रतिष्ठार्थमिदं रजतंचंद्रदैवतं यथानामगोत्रायब्राह्मणाय दक्षिणात्वेनदातुमहमुत्सृजे इतिपितृदक्षिणां दद्यात्। एवमेवपितामहादिपं-

चश्राद्धदक्षिणामपिदद्यात् (दैवे रजतनिषेधः) असंभवेफलमूलादिकंदद्यात् ।

भाषाभावार्थ—पश्चात् ब्राह्मणकी आज्ञा लेके पिंडोंको उठावै और थालीपात्रमें रखके सुगंधि लेवे फिर पिंडोंके नीचेकी दर्भा और जलाहुवा तृण अग्निके अंदर गेरदेवै, पश्चात्—स्वयं यजमान मूंधे किये हुये अर्घ पात्रोंको सूधा करके सव्य आदिसे देवोंके श्राद्धपूर्तिके अर्थ सुवर्णदक्षिणा देवै अर्थात् ऊपर लिखे मूजब संकल्प पढके पितृसंबंधि और मातामहसंबंधि विश्वेदेवोंके श्राद्धप्रतिष्ठाके अर्थ दक्षिणा ब्राह्मणको देवै, फिर अपसव्य आदि करके पिताका गोत्र नाम उच्चारण करै और श्राद्धप्रतिष्ठाके अर्थ रजत (चांदी) की दक्षिणा देवै इसीतरह दादा, परदादा, नाना, परनाना, बूढा नानाके श्राद्धदक्षिणा चांदीकी देना चाहिये परन्तु देवदक्षिणा चांदीकी नहीं देवै, सुवर्णका अभाव हो तो तामे, या फल, नारेल, कन्द आदिकी दक्षिणा देवे ॥

ततःसव्येनॐविश्वेदेवाःप्रीयन्ताम्।इतिप्रार्थ्य।
अपसव्येनॐवाजेवाजेऽवतवाजिनोनोधनेषुवि-
प्राऽअमृताऽऋतज्ञाः।अस्यमध्वःपिबतमादयध्वं
तृप्तायातपथिभिर्देवयानैः। इतिमंत्रेणपितॄन्वि-
सृज्य ॐआमावाजस्यप्रसवोजगम्यादेमेद्यावा-
पृथिवीविश्वरूपे।आमागंतांपितरामातराचामासो-
मोऽअमृतत्वेन गम्यात्।इतिप्रदक्षिणीकृत्यनम-
स्कृत्योपविशेत्।ततः सव्येनदेवताभ्यइतित्रिर्ज-
पित्वाऽपसव्येन रक्षादीपान् निर्वाप्य सव्येनह-
स्तौपादौप्रक्षाल्याचम्यॐ प्रमादात्कुर्वतांकर्म
इतित्रिः पठित्वा विष्णुंस्मरेत् ततःपिंडान्गाम्
अजं वायसान् वा खादयेत्।अग्नौजलेवाक्षिपेत्
पुत्रकामः पितामहपिंडम्ॐअपांत्वौषधीनांरसं
प्राशयामि भूतकृतंगर्भंधत्स्व इतिमंत्रेणऋतु-
स्नातायै पितृभक्तायै साध्व्यै धर्मपत्न्यैदद्यात्
साशुचिर्वाग्यता ॥

भाषाभावार्थ—फिर सव्य होके विश्वेदेवोंकी प्रार्थ-नां करै और अपसव्यसे (वाजेवाजे) इस मन्त्र करके पितरोंका विसर्जन करदेवै,(मंत्रका अर्थ) हे पितर आप (अमृताः) अमर हो (ऋतज्ञाः) सत्यरूप हो (विप्राः) ब्राह्मणोंके शरीरमें स्थित हो और (वाजि-नो) अश्वकी तरह शीघ्रगतिवाले हो सो (वाजेवाजे) अन्नके (धनेषु) धनके स्थित भये हुये (नो) हमारी (अवत) पालना करो और (अस्य मध्वः) इस श्राद्धके मधु अमृतरूप अन्नके रसको (पिबत) पान करो और पीनेके अनंतर (मादयध्वं) तृप्त होवो तृप्त होनेके बाद (देवयानैः पथिभिः) देवतोंके जाने योग्य मार्गों करके (यात) स्वर्गके प्रति गमन करो ॥ इति मंत्रार्थः॥ फिर विसर्जन करनेके अनन्तर (आमावाजस्य) इस मंत्रसे ब्राह्मणोंकी परिक्रमा करै और सव्य होके (देवताभ्यः) इस मंत्रको तीन वेर जपै फिर अपसव्य होके श्राद्धकी रक्षा करने-

वाले दीपकोंको शांत करै और सव्य करके हाथ, पैर जलसे धोवै; आचमन करै और (प्रमादात्) इस श्लोकोंको पढके, विष्णुका स्मरण करै, फिर पिंडोंको गौ या बकरी, काग आदिकोंको खिला देवै । अथवा अगाध शुद्ध जलमें या अग्निमें गेर देवै यदि पुत्रकी इच्छा होवे तो दादेके पिंडको (अपां त्वौषधीनां) इस मंत्र करके ऋतुस्नान करी हुई भक्ति युक्त साध्वी उत्तम अपनी स्त्रीको देवै फिर स्त्री शुद्ध होके मौनधारिणी होय ॥

पुत्रकामा ॐआधत्तपितरोगर्भंकुमारंपुष्करस्रजम्।यथेहपुरुषोऽसत्।इतिमंत्रेपठितेऽश्नीयात्। ततोवैश्वदेवबलिकर्मणीकृत्वाश्राद्धीयद्रव्याणि ब्राह्मणेभ्यःप्रतिपाद्यदशाऽष्टौवाश्रोत्रियब्राह्मणान्भोजयेत् । अथ वैश्वदेवबलिकर्म ॥ तत्रादौ पश्चादग्नेः प्राङ्मुखउपविश्यसजघनंदक्षिणं जान्वाच्यमणिकोदकेनाऽग्निंपर्युक्ष्यहस्तेनद्रा-

दशपर्वपूरमोदनंवाऽऽर्द्राऽऽमलकमात्रमादाय। ॐब्रह्मणेस्वाहा इदंब्रह्मणे। ॐप्रजापतयेस्वाहाइदं प्रजापतये। ॐगृह्याभ्यःस्वाहा इदंगृह्याभ्यः। ॐकश्यपायस्वाहा इदंकश्यपाय। ॐअनुमतयेस्वाहा इदमनुमतये। इति देवयज्ञः। इति पंचाहुतीर्हुत्वामणिकसमीपेप्राक्संस्थमुदक्संस्थंवाहुतशेषान्नेनबलित्रयंदद्यात्। तद्यथाॐपर्ज्जन्यायनमःइदंपर्ज्जन्याय। ॐअद्भ्योनमः इदमद्भ्यः। ॐपृथिव्यै नमः इदंपृथिव्यै। इति दद्यात्। ततोद्वारशाखयोर्दक्षिणोत्तरयोर्यथाक्रमं ॐधात्रेनमःइदंधात्रेॐविधात्रेनमःइदंविधात्रेइति द्वौबलीदत्त्वाप्रतिदिशं ॐ वायवेनमः। इत्यनेनचतसृषुदिक्षुचतुरोबलीन् दद्यात्। इदंवायवे नमइत्यपित्यागः४दिशांच। ॐप्राच्यैदिशेनमः। इदंप्राच्यैदिशे। ॐदक्षिणस्यैदिशेनमः। इदं दक्षिणस्यै दिशे। ॐप्रतीच्यैदिशेनमः। इदंप्रती-

च्यैदिशे।ॐउदीच्यैदिशेनमः इदमुदीच्यैदिशे ४ इत्यादिदिग्भ्यश्चबलीन्दद्यात् । दत्तानांब-लीनामन्तरेॐब्रह्मणेनमः इदंब्रह्मणे । ॐअं-तरिक्षायनमःइदमन्तरिक्षाय । ॐसूर्यायनमः इदं सूर्याय।इतिप्राक्संस्थंबलित्रयंदद्यात्।ततो ब्रह्मादिबलित्रयाणामुत्तरप्रदेशे ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्योनमः इदंविश्वेभ्योदेवेभ्यः।ॐ विश्वेभ्यो भूतेभ्योनमः इदंविश्वेभ्योभूतेभ्यः। इतिद्वौब-लीदद्यात्। तयोरुत्तरतः। ॐउषसेनमः इदमु-षसे।ॐभूतानांपतयेनमःइदंभूतानांपतये। इति द्वौबलीदद्यात् । इतिभूतयज्ञः। ततोब्रह्मादीनां बलीनांदक्षिणप्रदेशे प्राचीनावीती दक्षिणामुखः ॐपितृभ्यःस्वधानमः।इतिमंत्रेणैकंबलिंपात्रे अवशिष्टान्नेनदद्यात्।इति पितृयज्ञः। तत्पात्रंप्रक्षा ल्य निर्णेजनजलं ब्रह्मादीनां बलीनां वायव्ये निनयेत्ॐयक्ष्मैतत्ते निर्णेजनंनमः।इदंयक्ष्मणे॥

भाषाभावार्थ–पुत्रकी कामना करनेवाली(आधत्त पितरो) इस मन्त्रके पढ़नेके बाद पिंडको भक्षण करै इससे पुत्र उत्तम होताहै, फिर वैश्वदेव और पंचबलिकर्म करके श्राद्धकी सामग्री ब्राह्मणोंको देदेवै और दश १० या आठ ८ विद्यायुक्त ब्राह्मणोंको भोजन करावै। (अथ वैश्वदेवबलिकर्मका भावार्थ लिखतेहैं) प्रथम अग्निसे पश्चिमकी तरफ पूर्वको मुख करके बैठे और जंघासहित दाहने गोडेको नीचेको रखके पात्रके जल- से अग्निका पर्युक्षण करै फिर अंगुलियोंके बारह पर्व भरजावे इतना अन्न अथवा गीले आंवलेके समान चा- वल आदि पदार्थ दाहने हाथमें लेके ॐब्रह्मणे स्वाहा ऐसे पढ़के अग्निमें आहुति देदेवै और इदं ब्रह्मणे, यह पढ़के त्याग अर्थात् ब्रह्माके अर्पण करै, इसीतरह (ॐप्रजा- पतये॰ गृह्याभ्यः॰ कश्यपाय॰ अनुमतये॰ यह) चार आहुति देवै, इसको देवयज्ञ कहतेहैं । यह पांच आहु- ति देनेके अनन्तर जलके पात्रके समीप पूर्वकी या उत्त-

रकी तरफ बचे हुये अन्न करके(पर्जन्यायनमः०अद्भ्यो नमः पृथ्व्यै०) यह तीन बलि देवै, फिर जलसे धोई हुई जगहमें दक्षिण और उत्तरको द्वारकी तरह (धात्रे नमः) (विधात्रेनमः०) यह दो बलि देके पूर्व आदि चार दिशाओंमें (वायवेनमः०) इस मन्त्रसे चार ४ बलि देवै, पश्चात् उन बलियोंके समीप पूर्व आदि दिशा-ओंमें (प्राच्यै दिशेनमः दक्षिणस्यै दिशे० प्रतीच्यै० उदीच्यै दिशे०) इन मन्त्रोंसे चार बलि देवै और इन बलियोंके बीचमें (ब्रह्मणे नमः अन्तारिक्षाय०सूर्याय०) यह तीन बलि पूर्व पूर्व देवै । फिर इन बलियोंसे उत्त-रकी तरफ (विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ॥ विश्वेभ्योभूते-भ्यः०) यह दो बलि प्रदान करैं, और इनके उत्तर (उषसे०भूतानां पतये०)यह२ बलि प्रदान करै,इसको भूतयज्ञ कहतेहैं । फिर ब्रह्माआदिकी बलियोंके दक्षिण की तरफ अपसव्य होके दाक्षिणको मुख किया हुआ, (पितृभ्य-स्स्वधा नमः) इस मन्त्र करके एक बलि देवै

इसको पितृयज्ञ कहतेहैं। फिर पात्रको धोये हुये जलको ब्रह्मा आदिकी बलियोंके वायुकोणमें (यक्ष्मैतत्ते निर्णेजनं नमः) इस मन्त्र करके त्यागदेवै कछु अन्न भी गेरै॥

ततः काकादिबलीन्बहिर्दद्यात्तद्यथा । ॐ ऐंद्रवारुणवायव्याः सौम्यावै नैर्ऋतास्तथा । वायसाःप्रतिगृह्णन्तुभूमावन्नंमयार्पितम्॥इदमन्नं वायसेभ्योनमः॥ १॥ ॐदेवामनुष्याःपशवोवयांसिसिद्धाःसयक्षोरगदैत्यसंघाः॥प्रेताःपिशाचस्तरवः समस्तायेचाऽन्नमिच्छन्तिमयाप्रदत्तम्॥इदमन्नंदेवादिभ्यः॥२॥ पिपीलिकाः कीटपतंगकाद्या बुभुक्षिताः कर्मनिबंधबद्धाः॥ प्रयान्तु।ते तृप्तिमिदंमयान्नंतेभ्योविसृष्टंसुखिनो भवन्तु।इदमन्नंपिपीलिकादिभ्यः॥३॥ येषांन मातानपितानबंधुर्नचान्नसिद्धिर्नतथान्नमस्ति॥ तत्तृप्तयेऽन्नंभुविदत्तमेतत्तेचान्नतृप्तामुदिताभवन्तु॥ सौरभेय्यःसर्वहिताः पवित्राः पुण्यराश-

यः ॥ प्रतिगृह्णन्तुमेग्रासंगावस्त्रैलोक्यमातरः ।
इदमन्नंगोभ्योनमः ॥ ५ ॥ द्वौश्वानौश्यामशबलौ
वैवस्वतकुलोद्भवौ ॥ ताभ्यामन्नंप्रयच्छामिस्या
तामेतावहिंसकौ ॥ इदमन्नंश्वभ्यांनमम ॥ ६ ॥
इतिवैश्वदेवबलिकर्म ॥ ततः ॐयस्यस्मृत्याच
नामोक्त्यातपोयज्ञक्रियादिषु ॥ न्यूनंसंपूर्णतां-
याति सद्योवंदेतमच्युतमितिपठित्वा अति-
थिसुतभृत्यबांधवादिभिः सहस्वयमपिभोजनं
कुर्यात् ॥

भाषाभावार्थ—वैश्वदेव करनेके अनन्तर मंडलसे
बाहर काक आदिके अर्थ बलिदान करै अर्थात्
(ऐंद्रवारुण०) इस मन्त्रसे कागलोंके अर्पण करै और
(देवामनुष्या०) इससे देवादिकोंके अर्थ (पिपी
लिका०) यह पढ़के पिपीलिका चींटी आदिको
देवै । और (सौरभेय्यः०) इस मंत्र करके गोग्रास

गौके अर्थ और (द्वौश्वानौ) इससे श्वानको बलि देवै इति वैश्वदेवबलिकर्म ॥ फिर (यस्य स्मृत्या०) यह पढ़के अतिथि, पुत्र, पौत्र, स्त्री, भृत्य, दास, शिष्य, मित्र, बांधवआदिसहित स्वयं यजमान भोजन करैं ।

तद्दिने श्रद्धदानप्रतिग्रहहोमस्वाध्यायभारान् वर्जयेतां कर्तृभोक्तारौ द्यूताध्वगमनमैथुनाया-सस्वाध्यायकलहं च पुनर्भोजनहिंसादीनिन कुर्यातामुइति श्रीबीकानेरराज्यान्तर्गतरत्नग-ढनगरनिवा सिनापण्डितगौडश्रीचतुर्थीलाल-शर्मणा विरचिते श्राद्धप्रकाशे पद्धतिखण्डेअनु कल्पपार्वणश्राद्धपद्धतिः समाप्ता ॥

भाषाभावार्थ—श्राद्धके दिन भोजन किये हुये ब्राह्म-णोंको दान, प्रतिग्रह, होम, वेदका पाठ, भारउठाना इत्यादि कर्म नहीं करना चाहिये और श्राद्ध करने-वाला यजमान भी जूवा, रस्तेचलना, स्त्रीसंग, परि-